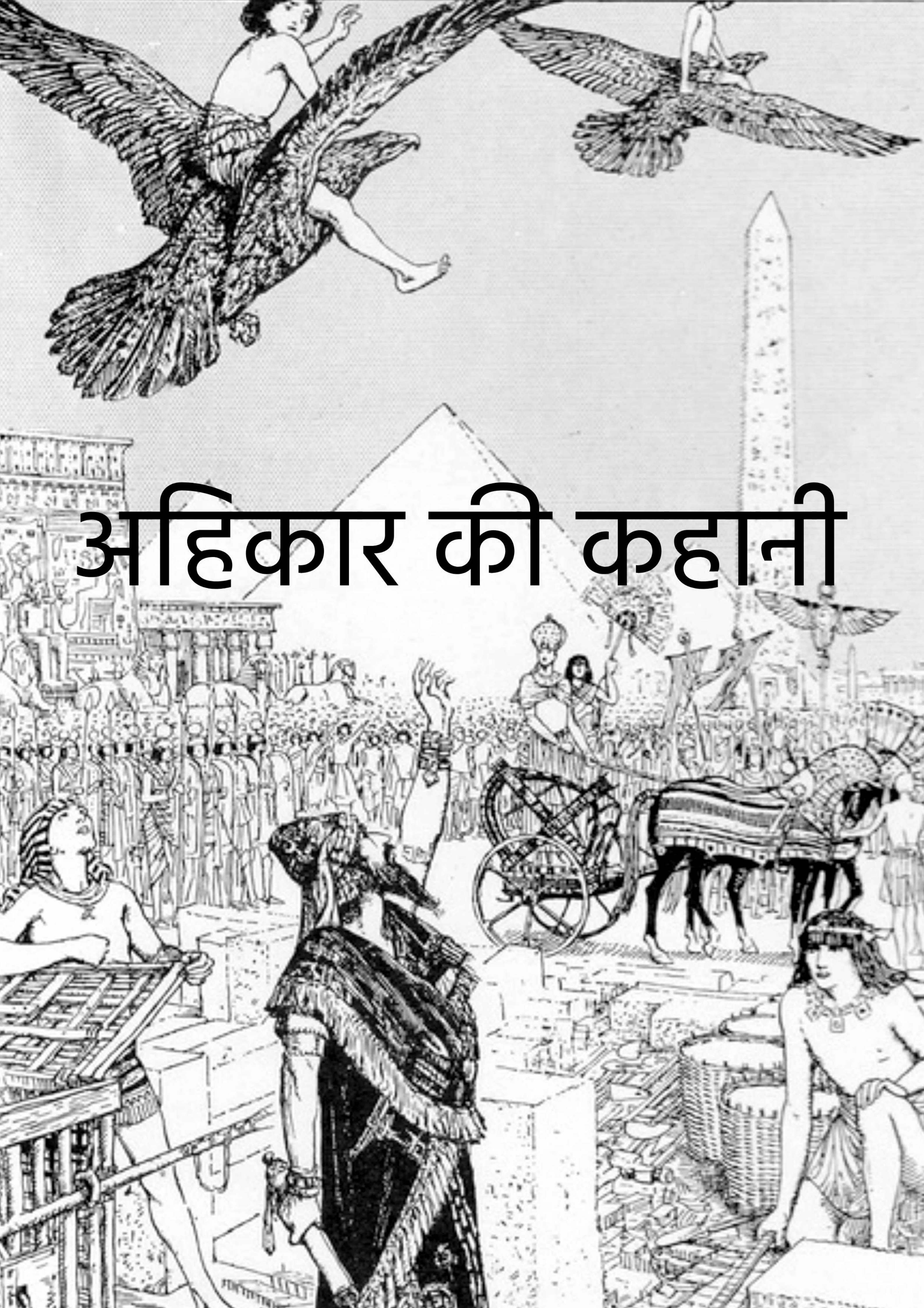
अहिकार की कहानी



परिचय

अहिकार की कहानी में हमें मानवीय विचार और बुद्धि के सबसे प्राचीन स्रोतों में से एक मिलता है। इसका प्रभाव कुरान और पुराने तथा नए नियम सहित कई लोगों की किंवदंतियों के माध्यम से पता लगाया जा सकता है। जर्मनी के ट्रेव्स में पाया गया एक मोज़ेक, दुनिया के बुद्धिमान लोगों में अहिकार के चरित्र को दर्शाता है। यहाँ उसकी रंगीन कहानी है। इस कहानी की तिथि जीवंत चर्चा का विषय रही है। विद्वानों ने अंततः इसे पहली शताब्दी के आसपास रखा जब मूल कहानी 500 ईसा पूर्व के अरामी पपीरस में एलिफेंटाइन के खंडहरों के बीच मिलने से वे गलत साबित हुए। कहानी स्पष्ट रूप से काल्पनिक है और इतिहास नहीं। वास्तव में पाठक द अरेबियन नाइट्स के पूरक पृष्ठों में इससे परिचित हो सकते हैं। यह शानदार ढंग से लिखा गया है, और कथा जो कार्रवाई, साज़िश और संकीर्ण भागने से भरी है, अंत तक ध्यान खींचती है। कल्पना की स्वतंत्रता लेखक की सबसे कीमती संपत्ति है। लेखन खुद को चार चरणों में विभाजित करता है: (1) कथा; (2) शिक्षण (नीतिवचनों की एक उल्लेखनीय श्रृंखला); (3) मिस्र की यात्रा; (4) समानताएँ या दृष्टांत (जिनके साथ अहिकार अपने भटके हुए भतीजे की शिक्षा पूरी करता है)।

अध्याय 1

अश्शूर के ग्रैंड वज़ीर अहिकार की 60 पत्नियाँ हैं, लेकिन उसे कोई बेटा नहीं हुआ। इसलिए उसने अपने भतीजे को गोद ले लिया। उसने उसे रोटी और पानी से ज़्यादा ज्ञान और बुद्धि से भर दिया।

1 राजा सन्हेरीब के वज़ीर, बुद्धिमान हाइकर और बुद्धिमान हाइकर के बहन के बेटे नादान की कहानी।
2 अश्शूर और नीनवे के राजा सरहदुम के बेटे राजा सन्हेरीब के दिनों में हाइकर नाम का एक बुद्धिमान व्यक्ति था, और वह राजा सन्हेरीब का वज़ीर था।
3 उसके पास बहुत सारा धन और बहुत सारी संपत्ति थी, और वह ज्ञान, राय और सरकार में कुशल, बुद्धिमान, दार्शनिक था, और उसने साठ महिलाओं से शादी की थी, और उनमें से प्रत्येक के लिए एक महल बनवाया था।
4 लेकिन इन सभी के बावजूद, उसे किसी से भी कोई संतान नहीं हुई। इनमें से कोई भी महिला उसका उत्तराधिकारी हो सकती थी।
5 और वह इस कारण बहुत दुखी हुआ, और एक दिन उसने ज्योतिषियों, विद्वानों और जादूगरों को इकट्ठा किया और उन्हें अपनी स्थिति और अपने बांझपन का मामला समझाया।
6 और उन्होंने उससे कहा, 'जाओ, देवताओं को बलि चढ़ाओ और उनसे विनती करो कि शायद वे तुम्हें एक लड़का प्रदान करें।'
7 और उसने वैसा ही किया जैसा उन्होंने उससे कहा था और मूर्तियों को बलि चढ़ाया, और उनसे विनती की और उनसे विनती की, और विनती की।
8 और उन्होंने उसे एक शब्द भी उत्तर नहीं दिया। और वह दुखी और उदास होकर चला गया, उसका दिल दुख रहा था।
9 और वह लौट आया, और परमप्रधान परमेश्वर से विनती की, और विश्वास किया, अपने दिल में जलन के साथ उससे विनती की, और कहा, 'हे परमप्रधान परमेश्वर, हे स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माता, हे सभी सृजित चीजों के निर्माता!
10 मैं तुझसे विनती करता हूँ कि मुझे एक लड़का दे, जिससे मैं उसके द्वारा सांत्वना पा सकूँ, कि वह मेरे शव के पास उपस्थित रहे, कि वह मेरी आँखें बंद करे, और मुझे दफ़नाए।'
11 तब उसके पास एक आवाज़ आई, 'क्योंकि तूने सबसे पहले खुदी हुई मूर्तियों पर भरोसा किया है, और उन्हें बलि चढ़ाई है, इस कारण तू जीवन भर निसंतान रहेगा।
12 परन्तु अपनी बहिन के बेटे नादान को ले, और उसे अपना बच्चा बना, और उसे अपनी विद्या और अपना अच्छा व्यवहार सिखा, और तेरे मरने पर वह तुझे दफ़नाएगा।'
13 तब उसने अपनी बहिन के बेटे नादान को लिया, जो एक छोटा दूध पीता हुआ बच्चा था। और उसने उसे आठ धाय-धाइयों को सौंप दिया, कि वे उसे दूध पिलाएँ और उसका पालन-पोषण करें।
14 और उन्होंने उसे अच्छे भोजन, कोमल शिक्षा और रेशमी वस्त्र, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े पहनाकर पाला। और वह रेशमी पलंगों पर बैठाया गया।
15 और जब नादान बड़ा हो गया और चलने लगा, और एक ऊँचे देवदार की तरह बढ़ने लगा, तो उसने उसे अच्छे शिष्टाचार, लेखन और विज्ञान और दर्शन की शिक्षा दी।
16 और कई दिनों के बाद राजा सन्हेरीब ने हैकार को देखा और पाया कि वह बहुत बूढ़ा हो गया है, और इसके अलावा उसने उससे कहा।
17 'हे मेरे आदरणीय मित्र, कुशल, भरोसेमंद, बुद्धिमान, राज्यपाल, मेरे सचिव, मेरे वज़ीर, मेरे चांसलर और निर्देशक; वास्तव में तुम बहुत बूढ़े हो गए हो और वर्षों से भारी हो गए हो; और तुम्हारा इस दुनिया से जाना निकट है।
18 मुझे बताओ कि तुम्हारे बाद मेरी सेवा में कौन होगा।' और हैकार ने उससे कहा, 'हे मेरे स्वामी, तुम्हारा सिर हमेशा अमर रहे! मेरी बहन का बेटा नादान है, मैंने उसे अपना बच्चा बनाया है।
19 और मैंने उसका पालन-पोषण किया है और उसे अपनी बुद्धि और अपना ज्ञान सिखाया है।'
20 और राजा ने उससे कहा, 'हे हैकार! उसे मेरे सामने लाओ, ताकि मैं उसे देख सकूं, और यदि मैं उसे उपयुक्त पाऊं, तो उसे अपने स्थान पर रखूं; और तुम अपने मार्ग पर जाओ, विश्राम करो और अपना शेष जीवन मधुर शांति से जियो।'
21 तब हैकार गया और अपनी बहन के बेटे नादान को पेश किया। और उसने उसे प्रणाम किया और उसे शक्ति और सम्मान की कामना की।
22 और उसने उसे देखा और उसकी प्रशंसा की और उस पर प्रसन्न हुआ और हैकार से कहा: 'क्या यह तुम्हारा बेटा है, हे हैकार? मैं प्रार्थना करता हूं कि भगवान उसे सुरक्षित रखे। और जैसे तुमने मेरी और मेरे पिता सरहदम की सेवा की है, वैसे ही तुम्हारा यह लड़का मेरी सेवा करे और मेरे उपक्रमों, मेरी जरूरतों और मेरे व्यवसाय को पूरा करे, ताकि मैं इसका सम्मान कर सकूं और इसे तुम्हारे लिए शक्तिशाली बना सकूं।'
23 और हैकार ने राजा को प्रणाम किया और उससे कहा, 'हे मेरे स्वामी राजा, आपका सिर सदा जीवित रहे! मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम मेरे लड़के

नादान के साथ धीरज रखो और उसकी गलतियों को क्षमा करो ताकि वह तुम्हारी सेवा कर सके।' 24 तब राजा ने उससे शपथ ली कि वह उसे अपने पसंदीदा लोगों में सबसे बड़ा और अपने दोस्तों में सबसे शक्तिशाली बनाएगा, और वह पूरे सम्मान और आदर के साथ उसके साथ रहेगा। और उसने उसके हाथ चूमे और उसे विदा किया। 25 और उसने अपनी बहन के बेटे नादान को अपने साथ ले लिया और उसे एक बैठक में बैठाया और रात-दिन उसे शिक्षा देने लगा जब तक कि उसने उसे रोटी और पानी से ज़्यादा ज्ञान और बुद्धि से भर नहीं दिया।

अध्याय 2

प्राचीन काल का "गरीब रिचर्ड का पंचांग"। धन, महिला, पोशाक, व्यापार, मित्रों से संबंधित मानव आचरण के अमर उपदेश। श्लोक 12, 17, 23, 37, 45, 47 में विशेष रूप से रोचक कहावतें पाई जाती हैं। श्लोक 63 की तुलना आज के कुछ निंदक विचारों से करें।

1 इस प्रकार उसने उसे सिखाया, कहा: 'हे मेरे बेटे! मेरी बात सुनो और मेरी सलाह का पालन करो और जो मैं कहता हूँ उसे याद रखो।

2 हे मेरे बेटे! यदि तुम कोई बात सुनते हो, तो उसे अपने दिल में ही रहने दो, और उसे किसी और को मत बताओ, कहीं ऐसा न हो कि वह जलता हुआ अंगारा बन जाए और तुम्हारी जीभ को जला दे और तुम्हारे शरीर में दर्द पैदा करे, और तुम बदनाम हो जाओ, और परमेश्वर और मनुष्य के सामने शर्मिंदा हो जाओ।

3 हे मेरे बेटे! यदि तुमने कोई खबर सुनी है, तो उसे फैलाओ मत; और यदि तुमने कुछ देखा है, तो उसे मत बताओ।

4 हे मेरे बेटे! अपनी वाक्पटुता को सुननेवाले के लिए सहज बनाओ, और उत्तर देने में जल्दबाजी मत करो।

5 हे मेरे बेटे! जब तुम कुछ सुनो, तो उसे मत छिपाओ।

6 हे मेरे बेटे! बंद गाँठ को मत खोलो, न ही उसे खोलो, और न ही खुली गाँठ को बंद करो।

7 हे मेरे बेटे! बाहरी सुंदरता का लालच मत करो, क्योंकि वह फीकी पड़ जाती है और चली जाती है, लेकिन एक सम्मानजनक याद हमेशा के लिए बनी रहती है।

8 हे मेरे बेटे! मूर्ख स्त्री अपनी बातों से तुम्हें धोखा न दे, कहीं ऐसा न हो कि तुम सबसे दयनीय मौत मरो, और वह तुम्हें जाल में तब तक फंसाए रखे जब तक कि तुम फँस न जाओ।

9 हे मेरे बेटे! वस्त्र और तेल से सजी हुई स्त्री की इच्छा मत करो, जो अपने मन में तुच्छ और मूर्ख हो। हाय तुम पर यदि तुम उसे अपनी कोई वस्तु दे दो, या अपने हाथ की कोई वस्तु उसे सौंप दो और वह तुम्हें पाप में फंसा दे, और परमेश्वर तुझ पर क्रोधित हो।

10 हे मेरे बेटे! बादाम के पेड़ की तरह मत बनो, क्योंकि वह सब पेड़ों से पहले पत्ते और सब के बाद खाने योग्य फल लाता है, बल्कि शहतूत के पेड़ की तरह बनो, जो सब पेड़ों से पहले खाने योग्य फल लाता है और सब के बाद पत्ते लाता है।

11 हे मेरे बेटे! अपना सिर नीचे झुकाओ, अपनी आवाज़ को नरम करो, और विनम्र बनो, और सीधे रास्ते पर चलो, और मूर्ख मत बनो। और जब तुम हंसो तो अपनी आवाज़ ऊँची मत करो, क्योंकि अगर ऊँची आवाज़ से घर बनता, तो गधा हर दिन बहुत से घर बनाता; और अगर हल को ताकत से चलाया जाता, तो ऊँटों के कंधों के नीचे से हल कभी नहीं हटाया जाता।

12 हे मेरे बेटे! एक बुद्धिमान व्यक्ति के साथ पत्थर हटाना दुखी व्यक्ति के साथ शराब पीने से बेहतर है।

13 हे मेरे बेटे! धर्मी लोगों की कब्रों पर अपनी शराब उंडेल दो, और अज्ञानी, घृणित लोगों के साथ मत पीना।

14 हे मेरे बेटे! जो बुद्धिमान लोग परमेश्वर से डरते हैं, उनसे जुड़ जाओ और उनके समान बनो, और अज्ञानी के निकट मत जाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम भी उनके समान बन जाओ
और उनके मार्ग सीख लो। 15 हे मेरे बेटे! जब तुम्हारा कोई
साथी या मित्र मिल जाए, तो उसे परखो, और फिर उसे अपना साथी और मित्र बना लो; और बिना परखे उसकी प्रशंसा मत करो; और जो बुद्धिहीन है, उसके साथ अपनी बात मत
बिगाड़ो। 16 हे मेरे बेटे! जब तक जूता तुम्हारे पाँव में रहे, उसे
काँटों पर पहनकर चलो, और अपने बेटे, अपने घराने और अपने बच्चों के लिए मार्ग बनाओ, और अपने जहाज को तना हुआ रखो, इससे पहले कि वह समुद्र और उसकी लहरों में
बहकर डूब जाए और उसे बचाया न जा सके। 17 हे मेरे बेटे!
यदि धनी व्यक्ति साँप खाए, तो लोग कहते हैं,--"यह उसकी बुद्धि से हुआ है," और यदि कोई गरीब व्यक्ति उसे खाए, तो
लोग कहते हैं, "उसकी भूख से।" 18 हे मेरे बेटे! 19 हे मेरे बेटे!
मूर्ख का पड़ोसी मत बनो, उसके साथ रोटी मत खाओ, और अपने पड़ोसियों की विपत्तियों में आनन्द मत मनाओ। यदि
तेरा शत्रु तुझ पर अत्याचार करे, तो उस पर दया करो। 20 हे
मेरे बेटे! जो मनुष्य परमेश्वर से डरता है, उससे डरो और
उसका आदर करो। 21 हे मेरे बेटे! अज्ञानी मनुष्य गिरकर ठोकर खाता है, परन्तु बुद्धिमान मनुष्य यदि ठोकर खा भी ले, तो विचलित नहीं होता, और यदि गिर भी जाए, तो तुरन्त उठ खड़ा होता है, और यदि बीमार हो, तो अपने प्राण बचा लेता है। परन्तु अज्ञानी और मूर्ख मनुष्य के रोग के लिये कोई औषधि
नहीं है। 22 हे मेरे बेटे! यदि कोई ऐसा मनुष्य तेरे पास आए जो
तुझ से छोटा हो, तो उसका सामना करने के लिये आगे बढ़ो, और खड़े रहो, और यदि वह तुझे बदला न दे सके, तो उसका रब तुझे उसका बदला देगा।

23 हे मेरे बेटे! अपने बेटे को पीटने में न रुक, क्योंकि उसके साथ मारपीट करना बगीचे में खाद डालने के समान है, और बटुए का मुंह बांधने के समान है, और पशुओं को बांधने के समान है, और किवाड़ को बंद करने के समान है।

24 हे मेरे बेटे! अपने बेटे को दुष्टता से रोक और उसे शिष्टाचार सिखा, इससे पहले कि वह तेरे विरुद्ध विद्रोह करे और लोगों के बीच तेरा अपमान करे और तू सड़कों और सभाओं में अपना सिर झुकाए और अपने दुष्ट कर्मों की बुराई के लिए दण्ड पाए।

25 हे मेरे बेटे! अपने लिए एक मोटा चमड़ावाला बैल और एक बड़ा खुरवाला गधा ले आ, और बड़े सींगवाला बैल न ले, और न किसी चालाक आदमी से दोस्ती कर, न झगड़ालू दास, न चोर दासी ले, क्योंकि जो कुछ तू उन्हें सौंपेगा, वह सब वे नाश कर देंगे।

26 हे मेरे बेटे! तेरे माता-पिता तुझे शाप न दें, और यहोवा उनसे प्रसन्न हो; क्योंकि यह कहा गया है, "जो अपने पिता या

अपनी माता का तिरस्कार करता है, वह पाप की मृत्यु मर जाए; और जो अपने माता-पिता का आदर करता है, वह अपने दिन और अपने जीवन को बढ़ाएगा और वह सब कुछ देखेगा जो अच्छा है।" 27 हे मेरे बेटे! बिना हथियार के मार्ग पर न चलो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि शत्रु कब तुम्हारा सामना करेगा, ताकि तुम उसके लिए तैयार रहो। 28 हे मेरे बेटे! एक नंगे, पत्ते रहित पेड़ की तरह मत बनो जो बढ़ता नहीं है, बल्कि एक पेड़ की तरह बनो जो अपनी पत्तियों और अपनी शाखाओं से ढका हुआ है; क्योंकि जिस आदमी के न तो पत्नी है और न ही बच्चे हैं, वह दुनिया में अपमानित होता है और लोग उससे घृणा करते हैं, एक पत्ते रहित और फलहीन पेड़ की तरह। 29 हे मेरे बेटे! सड़क के किनारे एक फलदार पेड़ की तरह बनो, जिसका फल हर आने-जाने वाला खाता है, और रेगिस्तान के जानवर उसकी छाया में आराम करते हैं और उसकी पत्तियाँ खाते हैं। 30 हे मेरे बेटे! हर भेड़ जो अपने मार्ग से भटक जाती है और उसके साथी भेड़िये का भोजन बन जाते हैं।

31 हे मेरे बेटे! यह मत कहो, “मेरा स्वामी मूर्ख है और मैं बुद्धिमान हूँ,” और अज्ञानता और मूर्खता की बातें मत कहो, कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हें तुच्छ समझे।

32 हे मेरे बेटे! उन दासों में से मत बनो, जिनसे उनके स्वामी कहते हैं, “हमारे पास से चले जाओ,” बल्कि उनमें से बनो, जिनसे वे कहते हैं, “हमारे पास आओ और हमारे पास आओ।”

33 हे मेरे बेटे! अपने दास को उसके साथी की उपस्थिति में दुलार मत करो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि उनमें से कौन अंत में तुम्हारे लिए सबसे अधिक मूल्यवान होगा।

34 हे मेरे बेटे! अपने प्रभु से मत डरो जिसने तुम्हें बनाया है, कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हारे प्रति चुप हो जाए।

35 हे मेरे बेटे! अपनी वाणी को सुन्दर और अपनी जीभ को मधुर बनाओ; और अपने साथी को अपने पैर पर न चलने दो, कहीं ऐसा न हो कि वह किसी और समय तुम्हारी छाती पर चले।

36 हे मेरे बेटे! यदि तू बुद्धिमान को बुद्धि की बात से पीटेगा, तो वह उसके सीने में लज्जा की एक गूढ़ भावना की तरह छिपी रहेगी; परन्तु यदि तू अज्ञानी को छड़ी से पीटेगा, तो वह न तो समझेगा, न सुनेगा।

37 हे मेरे बेटे! यदि तू अपनी आवश्यकताओं के लिए किसी बुद्धिमान को भेजे, तो उसे बहुत आज्ञा न दे, क्योंकि वह तेरे काम को तेरी इच्छा के अनुसार करेगा; और यदि तू किसी मूर्ख को भेजे, तो उसे आज्ञा न दे, परन्तु स्वयं जाकर अपना काम कर, क्योंकि यदि तू उसे आज्ञा देगा, तो वह तेरे मन की इच्छा के अनुसार नहीं करेगा। यदि वे तुझे किसी काम से भेजें, तो उसे शीघ्रता से पूरा कर।

38 हे मेरे बेटे! अपने से अधिक बलवान को अपना शत्रु न बना, क्योंकि वह तेरा नाप लेगा, और तुझ से अपना बदला लेगा।

39 हे मेरे बेटे! अपने बेटे और अपने दास को अपनी संपत्ति उनके हाथ सौंपने से पहले उनकी परीक्षा कर, कहीं ऐसा न हो कि वे उसे छीन लें; क्योंकि जिसके हाथ भरे हैं, वह बुद्धिमान कहलाता है, चाहे वह मूर्ख और अज्ञानी ही क्यों न हो; और जिसके हाथ खाली हैं, वह दरिद्र और अज्ञानी कहलाता है, चाहे वह बुद्धिमानों का राजकुमार ही क्यों न हो।

40 हे मेरे बेटे! मैंने एक नागकेसर खाया है, और एक एलो निगला है, और मैंने गरीबी और अभाव से अधिक कड़वी कोई चीज नहीं पाई है।

41 हे मेरे बेटे! अपने बेटे को मितव्ययिता और भूख सिखा, ताकि वह अपने घर का प्रबंधन अच्छी तरह से कर सके।

42 हे मेरे बेटे! अज्ञानी को बुद्धिमानों की भाषा मत सिखा, क्योंकि यह उसके लिए बोझिल हो जाएगी।

43 हे मेरे बेटे! अपने मित्र को अपनी स्थिति मत दिखा, कहीं ऐसा न हो कि वह तुझे तुच्छ समझे।

44 हे मेरे बेटे! हृदय का अंधापन आँखों के अंधेपन से अधिक दुखदायी है, क्योंकि आँखों का अंधापन थोड़ा-थोड़ा करके ठीक किया जा सकता है, परन्तु हृदय का अंधापन ठीक नहीं किया जा सकता, और वह सीधा मार्ग छोड़कर टेढ़े मार्ग पर चलता है।

45 हे मेरे बेटे! मनुष्य का अपने पैर से ठोकर खाना, मनुष्य के अपनी जीभ से ठोकर खाने से बेहतर है।

46 हे मेरे बेटे! जो मित्र निकट है, वह दूर रहने वाले अधिक उत्तम भाई से बेहतर है।

47 हे मेरे बेटे! सुंदरता फीकी पड़ जाती है, पर विद्या कायम रहती है, और संसार क्षीण होकर व्यर्थ हो जाता है, पर अच्छा नाम न तो व्यर्थ होता है, न क्षीण।

48 हे मेरे बेटे! जिस मनुष्य को चैन नहीं, उसकी मृत्यु उसके जीवन से उत्तम है; और रोने का शब्द गाने के शब्द से उत्तम है; क्योंकि शोक और रोना, यदि उनमें परमेश्वर का भय हो, तो गाने और आनन्द के शब्द से उत्तम हैं।

49 हे मेरे बच्चे! तेरे हाथ में मेंढक की जांघ, तेरे पड़ोसी के बर्तन में हंस से उत्तम है; और तेरे निकट की भेड़ दूर के बैल से अच्छी है; और तेरे हाथ में एक गौरैया उड़ती हुई हजार गौरैयों से अच्छी है; और इकट्ठा होने वाली दरिद्रता बहुत भोजन के बिखराव से अच्छी है; और जीवित लोमड़ी मरे हुए सिंह से अच्छी है; और एक पौंड ऊन एक पौंड धन से, मेरा मतलब सोने और चांदी से उत्तम है; क्योंकि सोना और चांदी धरती में छिपे और ढके हुए हैं, और दिखाई नहीं देते; लेकिन ऊन बाज़ारों में रहती है और देखी जाती है, और जो इसे पहनता है, उसके लिए यह सुन्दर होती है।

50 हे मेरे बेटे! बिखरी हुई दौलत से थोड़ी दौलत बेहतर है।

51 हे मेरे बेटे! ज़िंदा कुत्ता मरे हुए ग़रीब आदमी से बेहतर है।

52 हे मेरे बेटे! जो ग़रीब आदमी नेक काम करता है, वह उस अमीर आदमी से बेहतर है जो पापों में मरा हुआ है।

53 हे मेरे बेटे! अपने दिल में एक बात रखो, और यह तुम्हारे लिए बहुत होगी, और सावधान रहो कि कहीं तुम अपने दोस्त का राज़ न खोल दो।

54 हे मेरे बेटे! जब तक तुम अपने दिल में सलाह न कर लो, तब तक तुम्हारे मुँह से एक बात भी न निकले। और झगड़ने वाले लोगों के बीच में मत खड़े रहो, क्योंकि बुरे शब्द से झगड़ा पैदा होता है, और झगड़े से लड़ाई होती है, और लड़ाई से लड़ाई होती है, और तुम्हें गवाही देने के लिए मजबूर होना पड़ेगा; लेकिन वहाँ से भाग जाओ और आराम करो।

55 हे मेरे बेटे! अपने से अधिक बलवान का सामना न करना, वरन् धीरज, धीरज और सीधा आचरण अपनाना, क्योंकि इससे बढ़कर कोई उत्तम वस्तु नहीं है।

56 हे मेरे पुत्र! अपने पहले मित्र से बैर न रखना, क्योंकि दूसरा मित्र टिक नहीं सकता।
57 हे मेरे पुत्र! दीन-दुख में उसके पास जाना, सुल्तान के सम्मुख उसके विषय में बात करना, और उसे सिंह के मुंह से बचाने का यत्न करना।
58 हे मेरे पुत्र! अपने शत्रु की मृत्यु पर आनन्द न मना, क्योंकि थोड़े ही समय में तू उसका पड़ोसी हो जाएगा, और जो तेरा उपहास करे, उसका आदर करना, उसका आदर करना, और उसके आगे-आगे नमस्कार करना।
59 हे मेरे बेटे! यदि आकाश में जल स्थिर हो जाए, और काला कौआ सफेद हो जाए, और गन्धरस मधु के समान मीठा हो जाए, तो अज्ञानी और मूर्ख लोग समझकर बुद्धिमान हो जाएं।
60 हे मेरे बेटे! यदि तू बुद्धिमान होना चाहता है, तो अपनी जीभ को झूठ बोलने से, अपने हाथ को चोरी करने से, और अपनी आंखों को बुराई देखने से रोक; तब तू बुद्धिमान कहलाएगा।
61 हे मेरे बेटे! बुद्धिमान मनुष्य तुझे छड़ी से मारे, परन्तु मूर्ख तुझे मीठी मरहम से अभिषेक न करे। अपनी जवानी में नम्र बन, और बुढ़ापे में तुझे सम्मान मिलेगा।
62 हे मेरे बेटे! पुरुष का उसके बल के दिनों में, और नदी का उसके बाढ़ के दिनों में विरोध न करना।
63 हे मेरे बेटे! पत्नी के विवाह में जल्दबाजी न करना, क्योंकि यदि सब ठीक हो जाए, तो वह कहेगी, 'हे मेरे स्वामी, मेरे लिए प्रबन्ध करो'; और यदि यह बुरा हो जाता है, तो वह उस व्यक्ति पर आरोप लगाएगी कि इसका कारण कौन था।
64 हे मेरे बेटे! जो व्यक्ति अपने पहनावे में सुंदर है, वह अपनी बातचीत में भी वैसा ही है; और जो व्यक्ति अपने पहनावे में नीच दिखता है, वह अपनी बातचीत में भी वैसा ही है।
65 हे मेरे बेटे! यदि तुमने चोरी की है, तो सुल्तान को इसकी जानकारी दो, और उसे इसका एक हिस्सा दो, ताकि तुम उससे बच सको, क्योंकि अन्यथा तुम्हें कड़वाहट सहनी पड़ेगी।
66 हे मेरे बेटे! उस व्यक्ति को अपना मित्र बनाओ जिसका हाथ संतुष्ट और भरा हुआ है, और उस व्यक्ति को अपना मित्र मत बनाओ जिसका हाथ बंद और भूखा है।
67 ऐसी चार चीजें हैं जिनसे न तो राजा और न ही उसकी सेना सुरक्षित रह सकती है: वजीर द्वारा उत्पीड़न, और खराब सरकार, और इच्छा की विकृति, और प्रजा पर अत्याचार; और चार चीजें जो छिप नहीं सकतीं: समझदार, और मूर्ख, और अमीर, और गरीब।'

अध्याय 3

अहिकार राज्य के मामलों में सक्रिय भागीदारी से सेवानिवृत्त हो जाता है। वह अपनी संपत्ति अपने विश्वासघाती भतीजे को सौंप देता है। यहाँ एक अद्भुत कहानी है कि कैसे एक कृतघ्न दुराचारी जालसाज बन जाता है। अहिकार को उलझाने के लिए एक चतुर साजिश के परिणामस्वरूप उसे मौत की सजा सुनाई जाती है। जाहिर है अहिकार का अंत।

1 इस प्रकार हैकार ने कहा, और जब उसने अपनी बहन के बेटे नादान को ये आदेश और कहावतें सुना दीं, तो उसने सोचा कि वह उन सभी का पालन करेगा, और वह नहीं जानता था कि इसके बजाय वह उसके प्रति थकावट और तिरस्कार और उपहास प्रदर्शित कर रहा था।
2 इसके बाद हैकार अपने घर में चुपचाप बैठ गया और उसने अपना सारा माल, और दास, और दासियाँ, और घोड़े, और मवेशी, और जो कुछ भी उसके पास था और उसने कमाया था, सब नादान को सौंप दिया; और आज्ञा देने और मना करने की शक्ति नादान के हाथ में रही। 3 और हैकर अपने घर में आराम से बैठ गया, और कभी-कभी हैकर राजा के पास जाकर उसे प्रणाम करता और घर लौट आता। 4 अब जब नादान ने देखा कि आदेश देने और मना करने की शक्ति उसके ही हाथ में है, तो उसने हैकर की स्थिति को तुच्छ जाना और उसका उपहास किया, और जब भी वह सामने आता, उसे दोष देने लगता और कहता, 'मेरा चाचा हैकर बुढ़ापे में है, और अब वह कुछ नहीं जानता।' 5 और उसने दासों और दासियों को पीटना शुरू कर दिया, और घोड़ों और ऊँटों को बेच दिया और अपने चाचा हैकर की सारी संपत्ति पर फिजूलखर्ची करने लगा। 6 और जब हैकर ने देखा कि उसे अपने सेवकों और अपने घराने पर कोई दया नहीं है, तो उसने उठकर उसे अपने घर से भगा दिया, और राजा को यह खबर भेजी कि उसने अपनी सारी संपत्ति और अपना भोजन बिखेर दिया है। 7 तब राजा ने उठकर नादान को बुलाया और उससे कहा: 'जब तक हैकार स्वस्थ रहेगा, तब तक कोई भी उसके माल, उसके घराने या उसकी सम्पत्ति पर शासन नहीं करेगा।' 8 तब नादान का हाथ उसके चाचा हैकार और उसकी सारी सम्पत्ति से उठ गया, और इस बीच वह न तो अंदर गया, न बाहर, और न ही उसने उसका अभिवादन किया। 9 तब हैकार को अपनी बहन के बेटे नादान के साथ अपने परिश्रम का पश्चाताप हुआ, और वह बहुत दुखी रहने लगा। 10 और नादान का एक छोटा भाई था जिसका नाम बेनुजर्दन था, इसलिए हैकार ने उसे नादान के स्थान पर अपने पास रख लिया, और उसका पालन-पोषण किया और उसे अत्यंत सम्मान दिया। और उसने अपनी सारी सम्पत्ति उसे सौंप दी, और उसे अपने घर का शासक बना दिया। 11 अब जब नादान को पता चला कि क्या हुआ है तो वह ईर्ष्या और जलन से भर गया, और उसने हर उस व्यक्ति से शिकायत करना शुरू कर दिया जो उससे सवाल करता था, और अपने चाचा हैकार का मज़ाक उड़ाते हुए कहा: 'मेरे चाचा ने मुझे अपने घर से भगा दिया है, और मेरे भाई को मुझसे ज़्यादा पसंद किया है, लेकिन अगर सर्वोच्च ईश्वर मुझे शक्ति दे, तो मैं उसे मार डालने का दुर्भाग्य लाऊँगा।' 12 और नादान लगातार इस बात पर विचार करता रहा कि वह उसके लिए कौन-सी बाधा खड़ी कर सकता है। और थोड़ी देर बाद नादान ने अपने मन में इस बात को सोचा, और फारस के राजा शाह द वाइज़ के बेटे आकीश को एक पत्र लिखा, जिसमें कहा गया था: 13 'अश्शूर और नीनवे के राजा सन्हेरीब और उसके वज़ीर और उसके सचिव हैकार की ओर से आपको शांति, स्वास्थ्य, शक्ति और सम्मान मिले, हे महान राजा! आपके और मेरे बीच पैसे हों। 14 और जब यह पत्र तुम्हारे पास पहुंचे, यदि तुम उठकर जल्दी से निसरीन के मैदान में, अश्शूर और नीनवे में चले जाओ, तो मैं बिना युद्ध और बिना युद्ध के राज्य तुम्हें सौंप दूंगा।'

15 और उसने मिस्र के राजा फिरौन को हाइकर के नाम से
एक और पत्र लिखा। 'हे पराक्रमी राजा, तुम्हारे और मेरे बीच
शांति हो!
16 यदि यह पत्र तुम्हारे पास पहुंचने के समय तुम उठकर
अश्शूर और नीनवे में निसरीन के मैदान में चले जाओ, तो मैं
बिना युद्ध और बिना लड़ाई के राज्य तुम्हें सौंप दूंगा।'
17 और नादान की लिखावट उसके चाचा हाइकर की
लिखावट जैसी थी।
18 फिर उसने दोनों पत्रों को मोड़ा, और उन्हें अपने चाचा
हाइकर की मुहर से सील कर दिया; वे फिर भी राजा के महल
में थे।
19 फिर उसने जाकर राजा की ओर से अपने चाचा हैकार को
भी एक पत्र लिखा: 'मेरे वजीर, मेरे सचिव, मेरे कुलपति, हैकार
को शांति और स्वास्थ्य मिले। 20 हे हैकार, जब यह पत्र तुम्हारे
पास पहुँचे, तो अपने साथ के सभी सैनिकों को इकट्ठा करो,
और उन्हें कपड़ों और संख्या में परिपूर्ण बनाओ, और पाँचवें
दिन निसरीन के मैदान में मेरे पास ले आओ। 21 और जब तुम
मुझे अपनी ओर आते देखो, तो जल्दी करो और सेना को मेरे
विरुद्ध ऐसे भेजो जैसे कि कोई शत्रु मुझसे युद्ध करना चाहता
हो, क्योंकि मेरे साथ मिस्र के राजा फिरौन के दूत हैं, ताकि वे
हमारी सेना की शक्ति देखें और हमसे डरें, क्योंकि वे हमारे
शत्रु हैं और हमसे घृणा करते हैं।'
22 तब उसने पत्र पर मुहर लगाई और उसे राजा के एक
सेवक के हाथ हैकार के पास भेज दिया। और उसने दूसरा पत्र
जो उसने लिखा था, लेकर राजा के सामने फैला दिया और उसे
पढ़कर सुनाया और उसे मुहर दिखाई।
23 और जब राजा ने पत्र में लिखी बातें सुनीं तो वह बहुत ही
उलझन में पड़ गया और बहुत ही भयंकर क्रोध से भर गया,
और बोला, 'आह, मैंने अपनी बुद्धि का परिचय दिया! मैंने
हैकार का क्या बिगाड़ा है कि उसने मेरे शत्रुओं को ये पत्र
लिखे हैं? क्या यह उसके प्रति मेरे द्वारा किए गए उपकार का
बदला है?'
24 और नादान ने उससे कहा, 'राजा, दुखी मत हो! और न ही
क्रोधित हो, बल्कि हम निसरीन के मैदान में चलें और देखें कि
यह कहानी सच है या नहीं।'
25 तब नादान पाँचवें दिन उठा और राजा, सैनिकों और वज़ीर
को लेकर निसरीन के मैदान के रेगिस्तान में चला गया। और
राजा ने देखा, और देखो! हैकार और सेना ने कतारें लगाईं।
26 और जब हैकार ने देखा कि राजा वहाँ है, तो उसने पास
जाकर सेना को युद्ध की तरह चलने और राजा के विरुद्ध
कतारें लगाने का संकेत दिया, जैसा कि पत्र में पाया गया था,
वह नहीं जानता था कि नादान ने उसके लिए क्या गड्ढा खोदा
है।
27 और जब राजा ने हैकार के कृत्य को देखा तो वह चिंता,
भय और घबराहट से भर गया, और बहुत क्रोध से भर गया।
28 और नादान ने उससे कहा, 'हे मेरे प्रभु राजा! क्या तुमने
देखा है कि इस दुष्ट ने क्या किया है? लेकिन तुम क्रोधित मत
हो और दुखी या दुखी मत हो, बल्कि अपने घर जाओ और
अपने सिंहासन पर बैठो, और मैं हैकार को तुम्हारे पास
बाँधकर और जंजीरों से जकड़कर लाऊँगा, और मैं तुम्हारे शत्रु
को बिना परिश्रम के भगा दूँगा।'
29 और राजा हैकार के बारे में क्रोधित होकर अपने सिंहासन
पर लौट गया, और उसके बारे में कुछ नहीं किया। और नादान
हैकार के पास गया और उससे कहा, 'अल्लाह, हे मेरे चाचा!
राजा वास्तव में तुम पर बहुत प्रसन्न है और जो कुछ उसने तुम्हें
आदेश दिया था, उसे पूरा करने के लिए तुम्हारा धन्यवाद
करता है।
30 और अब उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है ताकि तुम सैनिकों
को उनके काम पर भेज दो और अपने हाथ पीछे बाँधकर और
अपने पैरों में ज़ंजीरें डालकर उसके पास आओ, ताकि फिरौन
के दूत यह देख सकें, और राजा उन और उनके राजा से डरें।'
31 तब हैकार ने उत्तर दिया और कहा, 'सुनना ही मानना
है।' और वह तुरंत उठ खड़ा हुआ और अपने हाथ पीछे
बाँध लिए, और अपने पैरों में ज़ंजीरें डाल दीं।
32 और नादान उसे लेकर राजा के पास गया। और जब हैकार
राजा के सामने आया, तो उसने ज़मीन पर उसके सामने
झुककर प्रणाम किया, और राजा से शक्ति और शाश्वत जीवन
की कामना की।
33 तब राजा ने कहा, 'हे हैकार, मेरे सचिव, मेरे मामलों के
राज्यपाल, मेरे कुलाधिपति, मेरे राज्य के शासक, मुझे बताओ
कि मैंने तुम्हारा क्या बुरा किया है कि तुमने मुझे इस कुरूप
कार्य से पुरस्कृत किया है।' 34 तब उन्होंने उसे उसके लिखे
हुए और उसकी मुहर लगे हुए पत्र दिखाए। और जब हैकार ने
यह देखा, तो उसके अंग काँप उठे और उसकी जीभ तुरन्त
बंध गई, और वह भय से एक शब्द भी बोलने में असमर्थ था;
लेकिन उसने अपना सिर धरती की ओर झुका लिया और गूंगा
हो गया। 35 और जब राजा ने यह देखा, तो उसे यकीन हो
गया कि यह बात उसी की ओर से है, और वह तुरंत उठा और
उन्हें हैकार को मार डालने और शहर के बाहर तलवार से
उसकी गर्दन काटने का आदेश दिया। 36 तब नादान
चिल्लाया और कहा, 'हे हैकार, हे काले चेहरे! राजा के साथ
ऐसा करने में तुम्हारा ध्यान या तुम्हारी शक्ति किस काम की?'
37 इस प्रकार कथावाचक कहता है। और तलवारबाज का
नाम अबू सामिक था। और राजा ने उससे कहा, 'हे
तलवारबाज! उठो, जाओ, हाइकर की गर्दन उसके घर के द्वार
पर काट दो, और उसके सिर को उसके धड़ से सौ हाथ दूर
फेंक दो।' 38 तब हाइकर राजा के सामने घुटने टेककर बोला,
'मेरे स्वामी राजा को हमेशा के लिए जीने दो! और यदि तुम
मुझे मारना चाहते हो, तो तुम्हारी इच्छा पूरी हो; और मैं जानता
हूँ कि मैं दोषी नहीं हूँ, लेकिन दुष्ट व्यक्ति को अपनी दुष्टता का
लेखा देना चाहिए; फिर भी, हे मेरे स्वामी राजा! मैं तुमसे और
तुम्हारी मित्रता से विनती करता हूँ, तलवारबाज को मेरे शरीर
को मेरे दासों को देने की अनुमति दो, ताकि वे मुझे दफना
सकें, और तुम्हारा दास तुम्हारी बलि बन जाए।' 39 राजा उठे
और तलवारबाज को उसकी इच्छा के अनुसार उसके साथ
व्यवहार करने की आज्ञा दी। 40 और उसने तुरन्त अपने
सेवकों को हुक्म दिया कि हैकार और तलवारबाज को
पकड़कर नंगा करके उसके साथ जाओ ताकि वे उसे मार
डालें।
41 और जब हैकार को पक्का पता चल गया कि उसे मार
दिया जाएगा तो उसने अपनी पत्नी को भेजा और उससे कहा,
'बाहर आओ और मुझसे मिलो, और तुम्हारे साथ एक हज़ार

जवान कुँवारियाँ हों, और उन्हें बैंगनी और रेशमी वस्त्र पहनाओ ताकि वे मेरी मृत्यु से पहले मेरे लिए रोएँ।
42 और तलवारबाज और उसके सेवकों के लिए मेज़ सजाओ। और खूब शराब मिलाओ, ताकि वे पी सकें।'
43 और उसने वह सब किया जो उसने उसे करने की आज्ञा दी थी। और वह बहुत बुद्धिमान, चतुर और विवेकशील थी। और उसने हर संभव शिष्टाचार और ज्ञान को एक साथ रखा।
44 और जब राजा और तलवारबाज की सेना पहुँची तो उन्होंने पाया कि मेज़ सजाई गई है, और शराब और शानदार भोजन रखे हुए हैं, और वे तब तक खाते-पीते रहे जब तक कि वे पेट भरकर नशे में नहीं हो गए।
45 तब हैकार ने तलवारबाज को सेना से अलग ले जाकर कहा, 'हे अबू सामिक, क्या तुम नहीं जानते कि जब सरहदुम राजा, सन्हेरीब का पिता, तुम्हें मारना चाहता था, तो मैंने तुम्हें ले लिया और एक निश्चित स्थान पर तब तक छिपा दिया जब तक राजा का क्रोध शांत नहीं हो गया और उसने तुम्हें वापस नहीं बुलाया?
46 और जब मैं तुम्हें उसके सामने लाया तो वह तुमसे प्रसन्न हुआ: और अब उस कृपा को याद करो जो मैंने तुम्हारे साथ की थी।
47 और मैं जानता हूँ कि राजा मेरे बारे में पछताएगा और मेरे वध के बारे में बड़े क्रोध से भर जाएगा।
48 क्योंकि मैं दोषी नहीं हूँ, और जब तुम मुझे उसके महल में उसके सामने पेश करोगे, तो तुम बड़े सौभाग्य से मिलोगे, और जानोगे कि मेरी बहन के बेटे नादान ने मुझे धोखा दिया है और मेरे साथ यह बुरा काम किया है, और राजा मुझे मारने के लिए पश्चाताप करेगा; और अब मेरे घर के बगीचे में एक तहखाना है, और कोई इसके बारे में नहीं जानता।
49 मुझे मेरी पत्नी की जानकारी में उसमें छिपा दो। और मेरे पास एक गुलाम है जो मारे जाने के लायक है।
50 उसे बाहर लाओ और मेरे कपड़े पहनाओ, और जब नौकर नशे में हों तो उन्हें उसे मार डालने की आज्ञा दो। वे नहीं जान पाएँगे कि वे किसको मार रहे हैं।
51 और उसके सिर को उसके धड़ से सौ हाथ दूर फेंक दो, और उसके शरीर को मेरे गुलामों को दे दो ताकि वे उसे दफना सकें। और तुम मेरे पास एक बड़ा खजाना जमा कर दोगे।
52 और फिर तलवारबाज ने वैसा ही किया जैसा हाइकर ने उसे आज्ञा दी थी, और वह राजा के पास गया और उससे कहा, 'तेरा सिर हमेशा के लिए अमर रहे!'
53 तब हाइकर की पत्नी हर हफ्ते उसके लिए छिपने की जगह में उतना ही नीचे उतारती थी जितना उसके लिए पर्याप्त होता था, और उसके अलावा किसी को भी इसके बारे में पता नहीं था।
54 और यह कहानी हर जगह फैल गई कि कैसे हैकार ऋषि की हत्या की गई और वह मर गया, और उस शहर के सभी लोगों ने उसके लिए शोक मनाया।
55 और वे रो पड़े और कहने लगे: 'हाय हायकार! हाय ... 58
लेकिन जब नादान, मूर्ख, अज्ञानी, कठोर हृदय वाला, अपने चाचा के घर गया, तो वह न तो रोया, न ही दुखी हुआ, न ही विलाप किया, बल्कि निर्दयी और लम्पट लोगों को इकट्ठा किया और खाने-पीने लगा। 59 और नादान ने हैकार की दासियों और दासों को पकड़ना शुरू कर दिया, और उन्हें बाँध दिया, उन्हें यातनाएँ दीं और उन्हें बुरी तरह पीटा। 60
और उसने अपने चाचा की पत्नी का सम्मान नहीं किया, जिसने उसे अपने बेटे की तरह पाला था, लेकिन वह चाहती थी कि वह उसके साथ पाप में पड़ जाए। 61 लेकिन हैकार को छिपने की जगह में काट दिया गया था, और उसने अपने दासों और अपने पड़ोसियों का रोना सुना, और उसने परमप्रधान परमेश्वर, दयालु की स्तुति की, और धन्यवाद दिया, और वह हमेशा परमप्रधान परमेश्वर से प्रार्थना और विनती करता था। 62 और
तलवारबाज समय-समय पर हैकार के पास आया, जब वह छिपने की जगह के बीच में था: और हैकार उसके पास आया और उससे विनती की। और उसने उसे सांत्वना दी और उसके उद्धार की कामना की। 63 और जब अन्य देशों में यह
कहानी सुनाई गई कि हैकार ऋषि मारे गए थे, तो सभी राजा दुखी हुए और राजा सन्हेरीब को तुच्छ जाना, और उन्होंने पहेलियों को सुलझाने वाले हैकार के लिए विलाप किया।

अध्याय 4

"स्फिंक्स की पहेलियाँ।" अहिकार के साथ वास्तव में क्या हुआ। उसकी वापसी।
1 और जब मिस्र के राजा ने यह सुनिश्चित कर लिया कि हाइकार मारा गया है, तो वह तुरंत उठ खड़ा हुआ और राजा सेनचेरीब को एक पत्र लिखा, जिसमें उसे 'शांति, स्वास्थ्य, शक्ति और सम्मान की याद दिलाई, जो हम विशेष रूप से तुम्हारे लिए चाहते हैं, मेरे प्यारे भाई, राजा सेनचेरीब।
2 मैं स्वर्ग और पृथ्वी के बीच एक महल बनाने की इच्छा रखता हूँ, और मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे अपने पास से एक बुद्धिमान, चतुर व्यक्ति भेजो जो इसे मेरे लिए बनाए, और मेरे सभी प्रश्नों का उत्तर दे, और मैं तीन साल के लिए अश्शूर के कर और सीमा शुल्क प्राप्त कर सकूँ।'
3 फिर उसने पत्र को सील कर दिया और सेनचेरीब को भेज दिया।
4 उसने इसे लिया और इसे पढ़ा और इसे अपने वज़ीरों और अपने राज्य के रईसों को दिया, और वे हैरान और शर्मिंदा हो गए, और वह बहुत गुस्से में था, और इस बात को लेकर उलझन में था कि उसे क्या करना चाहिए। 5 तब उसने
पुरनियों, विद्वानों, बुद्धिमानों, दार्शनिकों, ज्योतिषियों और अपने देश के सब लोगों को इकट्ठा किया, और उन्हें पत्र पढ़कर सुनाया और उनसे पूछा, 'तुममें से कौन मिस्र के राजा फिरौन के पास जाकर उसके प्रश्नों का उत्तर देगा?'
6 और उन्होंने उससे कहा, 'हे हमारे प्रभु राजा! जान लीजिए कि आपके राज्य में आपके वजीर और सचिव हैकार के अलावा कोई भी ऐसा नहीं है जो इन प्रश्नों से परिचित हो।
7 लेकिन हम इस काम में कुशल नहीं हैं, सिवाय नादान के, जो उसकी बहन का बेटा है, क्योंकि उसने उसे अपनी सारी बुद्धि, ज्ञान और ज्ञान सिखाया है। उसे अपने पास बुलाओ, शायद वह इस कठिन गाँठ को खोल दे।'
8 तब राजा ने नादान को बुलाया और उससे कहा, 'इस पत्र को देखो और समझो कि इसमें क्या है।' और जब नादान ने इसे पढ़ा, तो उसने कहा, 'हे मेरे प्रभु! कौन स्वर्ग और पृथ्वी के बीच एक महल बनाने में सक्षम है?'

9 और जब राजा ने नादान की बात सुनी तो वह बहुत दुखी हुआ, और अपने सिंहासन से नीचे उतर आया और राख में बैठ गया, और हायकार के लिए रोने और विलाप करने लगा।
10 कह रहा था, 'ओह मेरे दुख! हे हायकार, जो रहस्यों और पहेलियों को जानता था! हाय हायकार, हे हायकार! हे मेरे देश के शिक्षक और मेरे राज्य के शासक, मैं तुम्हारे जैसा कहाँ पाऊँगा? हे हायकार, हे मेरे देश के शिक्षक, मैं तुम्हारे लिए कहाँ जाऊँ? हाय हाय! मैंने तुम्हें कैसे नष्ट कर दिया! और मैंने एक मूर्ख, अज्ञानी लड़के की बात सुनी, जो ज्ञान के बिना, धर्म के बिना, पुरुषत्व के बिना था।
11 आह! और फिर हाय मेरे लिए! कौन तुम्हें मुझे एक बार के लिए दे सकता है, या मुझे यह संदेश ला सकता है कि हायकार जीवित है? और मैं उसे अपने राज्य का आधा हिस्सा दे दूँगा।
मैं तुझे एक बार देखूं, तुझे निहारने से मेरा मन भर जाए और तुझसे आनंदित हो।
13 आह! हे मेरे लिए हमेशा का दुख! हे हाइकार, मैंने तुझे कैसे मार डाला! और जब तक मैं इस मामले का अंत नहीं देख लेता, तब तक मैं तेरे मामले में नहीं रुका।'
14 और राजा रात-दिन रोता रहा। अब जब तलवारबाज ने राजा के क्रोध और हाइकार के लिए उसके दुख को देखा, तो उसका दिल उसके प्रति नरम हो गया,, और वह उसके सामने गया और उससे कहा:
15 'हे मेरे स्वामी! अपने सेवकों को मेरा सिर काटने की आज्ञा दीजिए।' तब राजा ने उससे कहा: 'हाय तुझ पर, अबू शमीक, तेरा क्या दोष है?'
16 और तलवारबाज ने उससे कहा, 'हे मेरे स्वामी! हर दास जो अपने स्वामी के वचन के विरुद्ध कार्य करता है, मारा जाता है, और मैंने आपकी आज्ञा के विरुद्ध कार्य किया है।'
17 तब राजा ने उससे कहा। 'अबू समीक, हाय रे! तूने मेरी आज्ञा के विरुद्ध क्या किया?'
18 और तलवारबाज ने उससे कहा, 'हे मेरे स्वामी! तूने मुझे हाइकर को मारने की आज्ञा दी थी, और मैं जानता था कि तू उसके लिए पछताएगा, और उसके साथ अन्याय हुआ था, और मैंने उसे एक निश्चित स्थान पर छिपा दिया, और मैंने उसके एक दास को मार डाला, और वह अब कुएँ में सुरक्षित है, और यदि तू मुझे आज्ञा दे तो मैं उसे तेरे पास ले आऊँगा।'
19 और राजा ने उससे कहा। 'अबू समीक, हाय रे! तूने मेरा मज़ाक उड़ाया है और मैं तेरा स्वामी हूँ।'
20 और तलवारबाज ने उससे कहा, 'नहीं, बल्कि तेरे सिर की कसम, हे मेरे स्वामी! हाइकर सुरक्षित और जीवित है।'
21 और जब राजा ने यह बात सुनी, तो उसे मामले का यकीन हो गया, और उसका सिर चकरा गया, और वह खुशी से बेहोश हो गया, और उसने उन्हें हैकार को लाने का आदेश दिया।
22 और उसने तलवारबाज से कहा, 'हे भरोसेमंद सेवक! अगर तुम्हारी बात सच है, तो मैं तुम्हें समृद्ध करना चाहता हूँ, और तुम्हारा सम्मान तुम्हारे सभी दोस्तों से ऊपर रखना चाहता हूँ।'
23 और तलवारबाज खुशी मनाते हुए आगे बढ़ा जब तक कि वह हैकार के घर नहीं पहुँच गया। और उसने छिपने की जगह का दरवाजा खोला, और नीचे जाकर देखा कि हैकार बैठा हुआ है, भगवान की स्तुति कर रहा है, और उसका धन्यवाद कर रहा है।
24 और उसने उसे पुकारा, 'हे हैकार, मैं सबसे बड़ी खुशी, और आनंद, और प्रसन्नता लेकर आया हूँ!'
25 और हैकार ने उससे पूछा, 'हे अबू सामिक, क्या खबर है?' और उसने उसे फिरौन के बारे में शुरू से आखिर तक सब कुछ बता दिया। फिर वह उसे लेकर राजा के पास गया।
26 और जब राजा ने उसे देखा, तो उसने देखा कि वह बहुत ही अभावग्रस्त है, और उसके बाल जंगली जानवरों की तरह लंबे हो गए हैं और उसके नाखून चील के पंजों की तरह हैं, और उसका शरीर धूल से गंदा है, और उसके चेहरे का रंग बदल गया है और फीका पड़ गया है और अब वह राख जैसा है।
27 और जब राजा ने उसे देखा तो वह उसके लिए बहुत दुखी हुआ और तुरंत उठकर उसे गले लगाया और चूमा, और उसके ऊपर रोया और कहा: 'भगवान की स्तुति हो! जिसने तुम्हें मेरे पास वापस लाया है।'
28 तब उसने उसे सांत्वना दी और उसे सांत्वना दी। और उसने अपना लबादा उतार दिया, और उसे तलवार चलानेवाले को पहना दिया, और उस पर बहुत कृपा की, और उसे बहुत धन दिया, और हैकार को आराम दिया।
29 तब हैकार ने राजा से कहा, 'मेरे स्वामी राजा को हमेशा के लिए जीवित रहने दो! ये दुनिया के बच्चों के कर्म हैं। मैंने अपने लिए एक खजूर का पेड़ उगाया था ताकि मैं उस पर झुक सकूँ, और वह एक तरफ झुक गया, और मुझे नीचे गिरा दिया।
30 लेकिन, हे मेरे प्रभु! जब से मैं तुम्हारे सामने आया हूँ, चिंता तुम्हें परेशान न करे! और राजा ने उससे कहा: 'धन्य है परमेश्वर, जिसने तुम पर दया दिखाई, और जाना कि तुम्हारे साथ अन्याय हुआ है, और तुम्हें बचाया और तुम्हें वध होने से बचाया।
31 लेकिन गर्म स्नान करो, और अपना सिर मुंडाओ, और अपने नाखून काटो, और अपने कपड़े बदलो, और चालीस दिनों तक अपने आप को खुश करो, ताकि तुम अपना भला कर सको और अपनी स्थिति सुधार सको और तुम्हारे चेहरे का रंग फिर से लौट आए।'
32 तब राजा ने अपना बहुमूल्य वस्त्र उतारकर हैकार को पहना दिया, और हैकार ने परमेश्वर का धन्यवाद किया और राजा को दण्डवत् किया, और परमप्रधान परमेश्वर की स्तुति करता हुआ आनन्दित और प्रसन्न होकर अपने निवास को चला गया। 33 और उसके घराने के लोग उसके साथ आनन्दित हुए, और उसके मित्र और जितने लोगों ने सुना कि वह जीवित है, वे भी आनन्दित हुए।

अध्याय 5

"पहेलियों" का पत्र अहिकार को दिखाया गया है। लड़के चील पर सवार हैं। पहली "हवाई जहाज" की सवारी। मिस्र के लिए रवाना। अहिकार, बुद्धिमान व्यक्ति होने के साथ-साथ हास्य की भावना भी रखता है। (श्लोक 27)।
1 और उसने राजा की आज्ञा के अनुसार किया, और चालीस दिन तक आराम किया।
2 फिर उसने अपने सबसे शानदार कपड़े पहने, और अपने दासों के साथ, जो उसके पीछे और आगे थे, आनन्दित और प्रसन्न होकर राजा के पास गया।

3 लेकिन जब उसके बहन के बेटे नादान ने देखा कि क्या हो रहा था, तो उसे डर और आतंक ने जकड़ लिया, और वह उलझन में पड़ गया, यह नहीं जानता था कि क्या करना है।
4 और जब हाइकर ने यह देखा तो वह राजा के सामने गया और उसे नमस्कार किया, और उसने भी उसे नमस्कार किया, और उसे अपने पास बैठाया, और उससे कहा,
'हे मेरे प्यारे हाइकर! इन पत्रों को देखो, जो मिस्र के राजा ने हमारे पास भेजे हैं, जब उसने सुना कि तुम मारे गए हो।
5 उन्होंने हमें भड़काया है और हम पर विजय प्राप्त की है, और हमारे देश के बहुत से लोग मिस्र के राजा द्वारा हमसे मांगे जाने वाले करों के डर से मिस्र भाग गए हैं।
6 तब हैकार ने पत्र लिया और उसे पढ़ा और उसकी विषय-वस्तु को समझा।
7 तब उसने राजा से कहा, 'हे मेरे प्रभु, क्रोधित न हो! मैं मिस्र जाऊंगा, और फिरौन को उत्तर दूंगा, और उसे यह पत्र दिखाऊंगा, और करों के विषय में उसे उत्तर दूंगा, और जो भाग गए हैं, उन सब को वापस भेज दूंगा; और मैं परमप्रधान परमेश्वर की सहायता से और तेरे राज्य की प्रसन्नता के लिए तेरे शत्रुओं को लज्जित करूंगा।'
8 और जब राजा ने हैकार से यह बात सुनी, तो वह बहुत प्रसन्न हुआ, और उसका हृदय प्रसन्न हुआ, और उसने उस पर अनुग्रह किया।
9 और हैकार ने राजा से कहा: 'मुझे चालीस दिन की मोहलत दीजिए ताकि मैं इस प्रश्न पर विचार कर सकूँ और इसे सुलझा सकूँ।' और राजा ने इसकी अनुमति दे दी।
10 और हैकार अपने घर गया, और उसने शिकारियों को उसके लिए दो युवा गरुड़ पकड़ने का आदेश दिया, और उन्होंने उन्हें पकड़ लिया और उसके पास ले आए: और उसने रस्सी बुनने वालों को उसके लिए कपास की दो रस्सियाँ बुनने का आदेश दिया, जिनमें से प्रत्येक दो हजार हाथ लंबी थी, और उसने बढ़ई को बुलाया और उन्हें दो बड़े बक्से बनाने का आदेश दिया, और उन्होंने ऐसा किया।
11 फिर उसने दो छोटे लड़कों को लिया, और हर दिन मेमनों की बलि देने और गरुड़ों और लड़कों को खिलाने और लड़कों को गरुड़ों की पीठ पर सवार करने में बिताया, और उसने उन्हें एक मजबूत गाँठ से बाँध दिया, और रस्सियों को गरुड़ों के पैरों से बाँध दिया, और उन्हें हर दिन थोड़ा-थोड़ा करके ऊपर की ओर उड़ने दिया, दस हाथ की दूरी पर, जब तक कि वे अभ्यस्त न हो जाएँ और इसके लिए प्रशिक्षित न हो जाएँ; और वे रस्सी की पूरी लंबाई तक ऊपर उठे जब तक कि वे आकाश तक नहीं पहुँच गए; लड़के अपनी पीठ के बल थे। फिर उसने उन्हें अपने पास खींच लिया।
12 और जब हैकार ने देखा कि उसकी इच्छा पूरी हो गई है, तो उसने लड़कों को आदेश दिया कि जब उन्हें आकाश में ऊपर उठाया जाए तो वे चिल्लाएँ, और कहें:
13 'हमारे लिए मिट्टी और पत्थर लाओ, ताकि हम राजा फिरौन के लिए एक महल बना सकें, क्योंकि हम बेकार हैं।'
14 और हैकार ने उन्हें प्रशिक्षित करना और उनका अभ्यास करना तब तक पूरा नहीं किया जब तक कि वे (कौशल के) सर्वोच्च संभव बिंदु तक नहीं पहुँच गए।
15 फिर उन्हें छोड़कर वह राजा के पास गया और उससे कहा, 'हे मेरे प्रभु! आपकी इच्छा के अनुसार काम पूरा हो गया है। मेरे साथ उठिए ताकि मैं आपको चमत्कार दिखाऊँ।'
16 तब राजा उठकर हैकार के साथ बैठ गया और एक चौड़े स्थान पर गया और चील और लड़कों को लाने के लिए भेजा, और हैकार ने उन्हें बाँध दिया और उन्हें रस्सियों की पूरी लंबाई में हवा में छोड़ दिया, और वे चिल्लाने लगे जैसा उसने उन्हें सिखाया था। फिर उसने उन्हें अपने पास खींच लिया और उनके स्थान पर रख दिया।
17 और राजा और उसके साथ के लोग बड़े आश्चर्य से चकित हुए: और राजा ने हैकार को उसकी आँखों के बीच चूमा और उससे कहा, 'हे मेरे प्रिय, शांति से जाओ! हे मेरे राज्य के गौरव! मिस्र में जाओ और फिरौन के सवालों का जवाब दो और परमप्रधान परमेश्वर की शक्ति से उसे हरा दो।'
18 तब उसने उसे विदा किया, और अपनी सेना और अपनी सेना और जवानों और उकाबों को लेकर मिस्र के निवासों की ओर चला; और जब वह पहुँच गया, तो वह राजा के देश की ओर मुड़ा।
19 और जब मिस्र के लोगों ने जाना कि सन्हेरीब ने फिरौन से बात करने और उसके सवालों के जवाब देने के लिए अपनी गुप्त परिषद के एक आदमी को भेजा है, तो उन्होंने राजा फिरौन को खबर दी, और उसने उसे अपने सामने लाने के लिए अपने गुप्त सलाहकारों का एक दल भेजा।
20 और वह आया और फिरौन के सामने गया, और उसे दण्डवत् किया जैसा कि राजाओं को करना उचित है।
21 और उसने उससे कहा: 'हे मेरे प्रभु राजा! सन्हेरीब राजा ने आपको बहुत शांति, शक्ति और सम्मान के साथ स्वागत किया है।
22 और उसने मुझे, जो उसका एक दास हूँ, भेजा है कि मैं तेरे प्रश्नों का उत्तर दूँ, और तेरी सारी इच्छा पूरी करूँ: क्योंकि तूने मेरे प्रभु राजा से एक ऐसे व्यक्ति को खोजने के लिए भेजा है जो तेरे लिए स्वर्ग और पृथ्वी के बीच एक किला बनाएगा।
23 और मैं परमप्रधान परमेश्वर की सहायता से और तेरे महान अनुग्रह और मेरे प्रभु राजा की शक्ति से तेरे लिए इसे वैसा ही बनाऊँगा जैसा तू चाहता है।
24 लेकिन, हे मेरे प्रभु राजा! तूने मिस्र के तीन वर्षों के करों के बारे में जो कुछ कहा है - अब एक राज्य की स्थिरता सख्त न्याय है, और यदि तू जीत जाता है और मेरे हाथ में तुझे उत्तर देने का कौशल नहीं है, तो मेरे प्रभु राजा तेरे लिए वे कर भेजेंगे जिनका तूने उल्लेख किया है।
25 और यदि मैं तेरे प्रश्नों का उत्तर दे चुका हूँ, तो जो कुछ तूने कहा है, उसे मेरे प्रभु राजा के पास भेज देना।'
26 और जब फिरौन ने यह बात सुनी, तो वह चकित हुआ और उसकी वाणी की स्वतंत्रता और उसके भाषण की मधुरता से घबरा गया।
27 और राजा फिरौन ने उससे पूछा, 'हे मनुष्य! तेरा नाम क्या है?' और उसने कहा, 'तेरा दास अबीकाम है, और मैं राजा सन्हेरीब की चींटियों में से एक छोटी चींटी हूँ।'
28 और फिरौन ने उससे कहा, 'क्या तेरे स्वामी के पास तुझसे बड़ा कोई नहीं था, कि उसने मुझे उत्तर देने और मुझसे बातचीत करने के लिए एक छोटी चींटी भेजी है?'

29 और हैकर ने उससे कहा, 'हे मेरे प्रभु राजा! मैं परमप्रधान परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मैं जो कुछ तेरे मन में है, उसे पूरा करूँ, क्योंकि परमेश्वर निर्बलों के साथ रहता है ताकि वह बलवानों को लज्जित करे।'
30 तब फिरौन ने आदेश दिया कि अबीकम के लिए एक घर तैयार किया जाए और उसे चारा, भोजन, पेय और जो कुछ भी उसकी ज़रूरत हो, वह दिया जाए।
31 और जब यह काम पूरा हो गया, तो तीन दिन बाद फिरौन ने बैंगनी और लाल कपड़े पहने और अपने सिंहासन पर बैठ गया, और उसके सभी वज़ीर और उसके राज्य के प्रमुख अपने हाथों को पार किए हुए, अपने पैरों को एक साथ सटाए हुए और अपने सिर झुकाए हुए खड़े थे।
32 और फिरौन ने अबीकम को बुलाने के लिए भेजा, और जब वह उसके सामने पेश किया गया, तो उसने उसे सजदा किया, और उसके सामने ज़मीन को चूमा।
33 और राजा फिरौन ने उससे कहा, 'हे अबीकम, मैं किसके समान हूँ? और मेरे राज्य के कुलीन लोग, वे किसके समान हैं?'
34 और हैकर ने उससे कहा, 'हे मेरे स्वामी, मैं तुम मूर्ति बेल की तरह हो, और तुम्हारे राज्य के कुलीन लोग उसके सेवकों की तरह हैं।'
35 उसने उससे कहा, 'जाओ, और कल यहाँ वापस आओ।' इसलिए हैकार राजा फिरौन की आज्ञा के अनुसार चला गया।
36 और अगले दिन हैकार फिरौन के सामने गया, और दण्डवत् करके राजा के सामने खड़ा हो गया। और फिरौन लाल रंग के वस्त्र पहने हुए था, और कुलीन लोग सफेद वस्त्र पहने हुए थे।
37 और फिरौन ने उससे कहा 'हे अबीकम, मैं किसके समान हूँ? और मेरे राज्य के कुलीन लोग किसके समान हैं?'
38 और अबीकम ने उससे कहा, 'हे मेरे प्रभु! आप सूर्य की तरह हैं, और आपके सेवक उसकी किरणों की तरह हैं।' और फिरौन ने उससे कहा, 'अपने घर जाओ, और कल यहाँ आओ।'
39 तब फिरौन ने अपने दरबारियों को शुद्ध सफेद वस्त्र पहनने का आदेश दिया, और फिरौन उनके समान वस्त्र पहने हुए था और अपने सिंहासन पर बैठा था, और उसने उन्हें हैकार को लाने का आदेश दिया। और वह अंदर गया और उसके सामने बैठ गया।
40 और फिरौन ने उससे कहा, 'हे अबीकम, मैं किसके समान हूँ? और मेरे सरदार, वे किसके समान हैं?'
41 और अबीकम ने उससे कहा, 'हे मेरे प्रभु! आप चाँद की तरह हैं, और आपके सरदार ग्रहों और सितारों की तरह हैं।' और फिरौन ने उससे कहा, 'जाओ, और कल तुम यहाँ रहो।'
42 तब फिरौन ने अपने सेवकों को विभिन्न रंगों के वस्त्र पहनने का आदेश दिया, और फिरौन ने लाल मखमल की पोशाक पहनी, और अपने सिंहासन पर बैठ गया, और उन्हें अबीकम को लाने का आदेश दिया। और वह अंदर गया और उसके सामने झुक गया।
43 और उसने कहा, 'हे अबीकम, मैं किसके समान हूँ? और मेरी सेनाएँ, वे किसके समान हैं?' और उसने कहा, 'हे मेरे प्रभु! आप अप्रैल के महीने की तरह हैं, और आपकी सेनाएँ उसके फूलों की तरह हैं।'
44 जब राजा ने यह सुना तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और बोला, 'ऐ अबीकाम! पहली बार तूने मेरी तुलना बेल की मूर्ति से और मेरे सरदारों की तुलना उसके सेवकों से की थी। 45 और दूसरी बार तूने मेरी तुलना सूर्य से और मेरे सरदारों की तुलना सूर्य की किरणों से की थी।
46 और तीसरी बार तूने मेरी तुलना चाँद से और मेरे सरदारों की तुलना ग्रहों और तारों से की।
47 और चौथी बार तूने मेरी तुलना अप्रैल के महीने से और मेरे सरदारों की तुलना उसके फूलों से की। लेकिन अब, ऐ अबीकाम! मुझे बता, तेरे मालिक, राजा सन्हेरीब, वह किसके समान है? और उसके सरदार, वे किसके समान हैं?'
48 और हैकार ने ऊँची आवाज़ में चिल्लाकर कहा: 'मेरे मालिक राजा और आपके सिंहासन पर बैठे होने का ज़िक्र करना मुझसे दूर रहे। लेकिन अपने पैरों पर खड़े हो जाइए ताकि मैं आपको बता सकूँ कि मेरे मालिक राजा किसके समान हैं और उनके सरदार किसके समान हैं।'
49 और फ़िरौन उसकी ज़बान की आज़ादी और जवाब देने में उसकी निर्भीकता से हैरान था। फिरौन अपने सिंहासन से उठ खड़ा हुआ और हैकार के सामने खड़ा हुआ और उससे कहा, 'अब मुझे बता, ताकि मैं समझ सकूँ कि तेरा स्वामी राजा किसके समान है और उसके कुलीन लोग किसके समान हैं।'
50 और हैकार ने उससे कहा: 'मेरा स्वामी स्वर्ग का परमेश्वर है, और उसके कुलीन लोग बिजली और गरज हैं, और जब वह चाहता है हवाएँ चलती हैं और वर्षा होती है।
51 और वह गरजने की आज्ञा देता है, और वह चमकती है और वर्षा करती है, और वह सूर्य को पकड़ता है, और वह अपनी रोशनी नहीं देता, और चाँद और तारे, और वे चक्कर नहीं लगाते।
52 और वह तूफान की आज्ञा देता है, और वह चलता है और वर्षा होती है और यह अप्रैल को रौंदता है और उसके फूलों और उसके घरों को नष्ट कर देता है।'
53 और जब फिरौन ने यह बात सुनी, तो वह बहुत हैरान हुआ और बहुत क्रोध से भर गया, और उससे कहा: 'हे मनुष्य! मुझे सच बताओ, और मुझे बताओ कि तुम वास्तव में कौन हो।'
54 और उसने उससे सच कहा। 'मैं हाइकर लेखक हूँ, राजा सन्हेरीब के गुप्त सलाहकारों में सबसे बड़ा, और मैं उसका वजीर और उसके राज्य का राज्यपाल और उसका कुलाधिपति हूँ।'
55 और उसने उससे कहा, 'तुमने यह बात सच कही है। लेकिन हमने हाइकर के बारे में सुना है, कि राजा सन्हेरीब ने उसे मार डाला है, फिर भी तुम जीवित और स्वस्थ प्रतीत होते हो।'
56 और हाइकर ने उससे कहा, 'हाँ, ऐसा ही था, लेकिन परमेश्वर की स्तुति हो, जो छिपी हुई बातों को जानता है, क्योंकि मेरे स्वामी राजा ने मुझे मार डालने की आज्ञा दी थी, और उसने दुष्ट लोगों की बात पर विश्वास किया, लेकिन प्रभु ने मुझे बचाया, और धन्य है वह जो उस पर भरोसा करता है।'
57 फिर फिरौन ने हयक़र से कहा, 'जाओ, कल यहाँ रहो, और मुझसे एक ऐसा वचन कहो जो मैंने अपने सरदारों, और अपने राज्य और अपने देश के लोगों से कभी नहीं सुना।'

अध्याय 6

चाल सफल हो जाती है। अहिकार फिरौन के हर सवाल का
जवाब देता है। चील पर सवार लड़के दिन का चरमोत्कर्ष हैं।
प्राचीन शास्त्रों में बहुत कम पाई जाने वाली बुद्धि, श्लोक 34-
45 में प्रकट होती है।
1 और हैकार अपने घर गया, और एक पत्र लिखा, जिसमें इस
प्रकार कहा गया:
2 अश्शूर के राजा सन्हेरीब और नीनवे से मिस्र के राजा
फिरौन को।
3 'हे मेरे भाई, तुझे शांति मिले! और हम इस बात से तुझे
बताते हैं कि भाई को अपने भाई की और राजाओं को एक-
दूसरे की ज़रूरत होती है, और मेरी तुझसे यह आशा है कि तू
मुझे नौ सौ किक्कार सोना उधार दे, क्योंकि मुझे कुछ सैनिकों
के भोजन के लिए इसकी ज़रूरत है, ताकि मैं इसे उन पर
खर्च कर सकूँ। और थोड़ी देर बाद मैं इसे तुझे भेज दूँगा।'
4 फिर उसने पत्र को मोड़ा, और अगले दिन फिरौन को पेश
किया।
5 और जब उसने यह देखा, तो वह हैरान हो गया और उससे
कहा, 'वास्तव में मैंने कभी किसी से ऐसी भाषा नहीं सुनी।'
6 तब हैकार ने उससे कहा, 'वास्तव में यह एक ऋण है जो तुम
मेरे स्वामी राजा के प्रति ऋणी हो।'
7 और फिरौन ने यह स्वीकार किया, और कहा, 'हे हैकार, यह
तुम्हारे जैसा है जो राजाओं की सेवा में ईमानदार है।
8 धन्य है परमेश्वर जिसने तुम्हें बुद्धि में परिपूर्ण बनाया है और
तुम्हें दर्शन और ज्ञान से सुसज्जित किया है।
9 और अब, हे हैकार, हम तुमसे जो चाहते हैं वह यह है कि
तुम स्वर्ग और पृथ्वी के बीच एक महल बनाओ।'
10 तब हैकार ने कहा, 'सुनना ही मानना है। मैं तुम्हारी
इच्छा और पसंद के अनुसार तुम्हारे लिए एक महल बनाऊँगा;
लेकिन, हे मेरे स्वामी मैं हमारे लिए चूना, पत्थर, मिट्टी और
कारीगर तैयार करता हूँ, और मेरे पास कुशल कारीगर हैं जो
तुम्हारी इच्छा के अनुसार तुम्हारे लिए निर्माण करेंगे।'
11 और राजा ने उसके लिए सब कुछ तैयार कर दिया, और वे
एक चौड़े स्थान पर गए; और हाइकर और उसके लड़के वहाँ
आए, और उसने चीलों और जवानों को अपने साथ ले लिया;
और राजा और उसके सभी सरदार गए और पूरा शहर इकट्ठा
हुआ, ताकि वे देख सकें कि हाइकर क्या करता है।
12 तब हाइकर ने चीलों को बक्सों से बाहर निकाला, और
जवानों को उनकी पीठ पर बाँध दिया, और चीलों के पैरों में
रस्सियाँ बाँध दीं, और उन्हें हवा में छोड़ दिया। और वे ऊपर
की ओर उड़ गए, जब तक कि वे आकाश और पृथ्वी के बीच
नहीं रह गए।
13 और लड़के चिल्लाने लगे, 'ईंटें लाओ, मिट्टी लाओ, ताकि
हम राजा का महल बना सकें, क्योंकि हम बेकार खड़े हैं!'
14 और भीड़ चकित और हैरान थी, और वे आश्चर्यचकित थे।
और राजा और उसके सरदार आश्चर्यचकित थे।
15 और हैकार और उसके सेवकों ने कामगारों को पीटना
शुरू कर दिया, और उन्होंने राजा के सैनिकों को यह कहते
हुए बुलाया, 'कुशल कारीगरों को जो चाहिए, वह लाओ और
उनके काम में बाधा मत डालो।'
16 और राजा ने उससे कहा, 'तू पागल है; कौन इतनी दूर तक
कुछ ला सकता है?'
17 और हैकार ने उससे कहा, 'हे मेरे प्रभु! हम हवा में महल
कैसे बना सकते हैं? और अगर मेरे प्रभु राजा यहाँ होते, तो वे
एक ही दिन में कई महल बना देते।'
18 और फिरौन ने उससे कहा, 'हे हैकार, अपने घर जाकर
आराम करो, क्योंकि हमने महल बनाना छोड़ दिया है, और
कल मेरे पास आना।'
19 तब हैकार अपने घर गया और अगले दिन वह फिरौन के
सामने उपस्थित हुआ। और फिरौन ने कहा, 'हे हैकार, तुम्हारे
स्वामी के घोड़े के बारे में क्या खबर है? क्योंकि जब वह
अश्शूर और नीनवे के देश में हिनहिनाता है, और हमारी
घोड़ियाँ उसकी आवाज़ सुनती हैं, तो अपने बच्चों को छोड़
देती हैं।' 20 और जब हाइकर ने यह बात सुनी, तो वह गया
और एक बिल्ली को लिया, और उसे बाँधकर उसे बुरी तरह
पीटना शुरू कर दिया, जब तक कि मिस्रियों ने यह नहीं सुन
लिया, और उन्होंने जाकर राजा को इसके बारे में बताया। 21
और फिरौन ने हाइकर को बुलाने के लिए भेजा, और उससे
कहा, 'हे हाइकर, तुम इस मूक जानवर को इस तरह क्यों पीट
रहे हो?' 22 और हाइकर ने उससे कहा, मेरे स्वामी राजा!
वास्तव में उसने मेरे साथ एक बुरा काम किया है, और इस
पिटाई और कोड़े के लायक है, क्योंकि मेरे स्वामी राजा
सन्हेरीब ने मुझे एक बढ़िया मुर्गा दिया था, और उसकी आवाज़
बहुत अच्छी थी और वह दिन और रात के घंटों को जानता था।
23 और बिल्ली आज रात उठी और अपना सिर काट कर
चली गई, और इस काम के कारण मैंने उसे यह मार डाला है।'
24 और फिरौन ने उससे कहा, 'हे हायकार, मैं इन सब बातों
से देख रहा हूँ कि तू बूढ़ा हो रहा है और बुढ़ापे में है, क्योंकि
मिस्र और नीनवे के बीच अड़सठ पारसंग हैं, और वह आज
रात कैसे गई और तेरे मुर्गे का सिर काट कर वापस आ गई?'
25 और हायकार ने उससे कहा, 'हे मेरे प्रभु! यदि मिस्र और
नीनवे के बीच इतनी दूरी होती तो तेरी घोड़ियाँ मेरे प्रभु राजा
के घोड़े की हिनहिनाहट और अपने बच्चों को फेंकना कैसे
सुन पातीं? और घोड़े की आवाज़ मिस्र तक कैसे पहुँच पाती?'
26 और जब फिरौन ने यह सुना, तो उसने जान लिया कि
हैकार ने उसके सवालों का जवाब दे दिया है।
27 और फिरौन ने कहा, 'हे हैकार, मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे
लिए समुद्र की रेत की रस्सियाँ बनाओ।'
28 और हैकार ने उससे कहा, "हे मेरे प्रभु राजा! उन्हें खजाने
से एक रस्सी लाने का आदेश दें ताकि मैं उसके जैसी एक
रस्सी बना सकूँ।'
29 तब हैकार घर के पीछे गया, और समुद्र के खुरदरे किनारे
पर छेद किए, और अपने हाथ में एक मुट्ठी रेत, समुद्र की रेत
ली, और जब सूरज उग आया, और छेदों में घुस गया, तो उसने
रेत को धूप में फैलाया जब तक कि वह रस्सियों की तरह बुनी
हुई न हो जाए।
30 और हैकार ने कहा, 'अपने सेवकों को ये रस्सियाँ लेने की
आज्ञा दो, और जब तुम चाहो, मैं तुम्हारे लिए उनके जैसी कुछ
रस्सियाँ बुन दूँगा।'
31 फिरौन ने कहा, 'हे हकर, हमारे पास एक चक्की का पाट
है और यह टूट गया है और मैं चाहता हूँ कि तुम इसे सिल दो।'

32 तब हकर ने इसे देखा और एक और पत्थर पाया।
33 और उसने फिरौन से कहा, 'हे मेरे प्रभु! मैं एक विदेशी हूँ: और मेरे पास सिलाई के लिए कोई औज़ार नहीं है।
34 लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम अपने वफादार मोची को इस पत्थर से सुएँ काटने का आदेश दो, ताकि मैं उस चक्की के पाट को सिल सकूँ।'
35 तब फिरौन और उसके सभी सरदार हँसे। और उसने कहा, 'परमप्रधान परमेश्वर धन्य हो, जिसने तुम्हें यह बुद्धि और ज्ञान दिया है।'
36 और जब फिरौन ने देखा कि हैकार ने उसे हरा दिया है, और उसे उसके उत्तर लौटा दिए, तो वह तुरन्त उत्तेजित हो गया, और उसने उन्हें आदेश दिया कि उसके लिए तीन वर्ष का कर एकत्र करें, और उसे हैकार के पास ले आएँ।
37 और उसने अपने वस्त्र उतारे और हैकार, उसके सैनिकों, और उसके सेवकों को पहनाए, और उसे उसकी यात्रा का खर्च दिया।
38 और उसने उससे कहा, 'शांति से जाओ, हे उसके स्वामी के बल और उसके डॉक्टरों के गौरव! क्या कोई सुल्तान तुम्हारे जैसा है? अपने स्वामी राजा सन्हेरीब को मेरा नमस्कार कहना, और उससे कहना कि हमने उसके लिए कैसे उपहार भेजे हैं, क्योंकि राजा थोड़े से संतुष्ट होते हैं।'
39 तब हैकार उठा, और राजा फिरौन के हाथों को चूमा और उसके सामने की भूमि को चूमा, और उसके लिए शक्ति और निरंतरता, और उसके खजाने में प्रचुरता की कामना की, और उससे कहा, 'हे मेरे स्वामी! मैं आपसे कामना करता हूँ कि हमारे देश का कोई भी व्यक्ति मिस्र में न रहे।' 40 और फिरौन उठ खड़ा हुआ और मिस्र की सड़कों पर यह घोषणा करने के लिए दूत भेजे कि अश्शूर और नीनवे के लोगों में से कोई भी मिस्र की भूमि में न रहे, बल्कि वे हाइकर के साथ चले जाएँ।
41 तब हाइकर राजा फिरौन से विदा लेकर गया, और अश्शूर और नीनवे के देश की खोज में निकल पड़ा; और उसके पास कुछ खज़ाने और बहुत सारी संपत्ति थी।
42 और जब यह खबर राजा सन्हेरीब तक पहुँची कि हाइकर आ रहा है, तो वह उससे मिलने के लिए बाहर गया और बहुत खुश हुआ और उसे गले लगाया और चूमा और उससे कहा, 'स्वागत है घर में: हे रिश्तेदार! मेरा भाई हाइकर, मेरे राज्य की ताकत और मेरे राज्य का गौरव।
43 अगर तुम मेरे राज्य और मेरी संपत्ति का आधा हिस्सा भी चाहते हो, तो मुझसे जो चाहो मांग लो।'
44 तब हैकार ने उससे कहा, 'हे मेरे प्रभु राजा, सदा जीवित रहो! हे मेरे प्रभु राजा! मेरी जगह अबू समीक पर कृपा करो, क्योंकि मेरा जीवन ईश्वर और उसके हाथों में था।'
45 तब राजा सन्हेरीब ने कहा, 'हे मेरे प्रिय हैकार, तुम्हारा सम्मान हो! मैं तलवारबाज अबू समीक का स्थान अपने सभी प्रिवी काउंसिलरों और अपने पसंदीदा लोगों से ऊंचा कर दूंगा।'
46 तब राजा ने उससे पूछना शुरू किया कि उसके पहले आगमन से लेकर उसके जाने तक फिरौन के साथ उसका कैसा व्यवहार रहा, और उसने उसके सभी सवालों के जवाब कैसे दिए, और उसने उससे कर, और कपड़े और उपहार कैसे प्राप्त किए।
47 और राजा सन्हेरीब ने बहुत खुशी मनाई, और हैकार से कहा, 'इस कर में से जो कुछ भी तुम लेना चाहो, ले लो, क्योंकि यह सब तुम्हारे हाथ में है।'
48 और हैकार ने कहा: 'राजा को हमेशा के लिए जीने दो! मैं अपने स्वामी राजा की सुरक्षा और उनकी महानता की निरंतरता के अलावा और कुछ नहीं चाहता। 49 हे मेरे स्वामी!
मैं धन और उसके समान से क्या कर सकता हूँ? लेकिन अगर आप मुझ पर कृपा करें, तो मुझे मेरी बहन के बेटे नादान को दे दें, ताकि मैं उससे उसके किए का बदला ले सकूँ, और उसका खून मुझे दे दूँ और मुझे उसके लिए दोषी न ठहराऊँ।' 50
और राजा सन्हेरीब ने कहा, 'उसे ले जाओ, मैंने उसे तुम्हें दे दिया है।' और हैकार ने अपनी बहन के बेटे नादान को पकड़ लिया, और उसके हाथों को लोहे की जंजीरों से बाँध दिया, और उसे अपने घर ले गया, और उसके पैरों में एक भारी बेड़ी डाल दी, और उसे एक मजबूत गाँठ से बाँध दिया, और उसे इस तरह बाँधने के बाद उसने उसे विश्राम-स्थान के पास एक अँधेरे कमरे में डाल दिया, और नेबूहाल को उसका पहरेदार नियुक्त कर दिया ताकि वह उसे प्रतिदिन एक रोटी और थोड़ा पानी दे।

अध्याय 7

अहिकार के दृष्टांत जिसमें वह अपने भतीजे की शिक्षा पूरी करता है। अद्भुत उपमाएँ। अहिकार लड़के को सुंदर नामों से पुकारता है। यहाँ अहिकार की कहानी समाप्त होती है।
1 और जब भी हइकार अंदर या बाहर जाता तो वह अपनी बहन के बेटे नादान को डाँटता और उससे बुद्धिमानी से कहता:
2 'हे नादान, मेरे बेटे! मैंने तुम्हारे साथ जो कुछ भी अच्छा और दयालु है, वह किया है और तुमने मुझे इसके लिए बदसूरत और बुरे और हत्या के साथ पुरस्कृत किया है।
3 'हे मेरे बेटे! कहावतों में कहा गया है: जो अपने कान से नहीं सुनता, वे उसे उसकी गर्दन के झुंड से सुनने के लिए मजबूर करेंगे।'
4 और नादान ने कहा, 'तुम किस कारण से मुझसे नाराज हो?'
5 और हैकार ने उससे कहा, 'क्योंकि मैंने तुझे पाला-पोसा, तुझे पढ़ाया-लिखाया, तुझे सम्मान और आदर दिया, तुझे महान बनाया, तुझे सबसे अच्छे संस्कारों के साथ पाला-पोसा, और तुझे अपने स्थान पर बिठाया ताकि तू संसार में मेरा उत्तराधिकारी हो, और तूने मेरे साथ कत्ल किया और मुझे बरबाद करके बदला दिया।
6 लेकिन प्रभु जानता था कि मेरे साथ अन्याय हुआ है, और उसने मुझे उस युद्ध से बचा लिया जो तूने मेरे लिए रखा था, क्योंकि प्रभु टूटे हुए दिलों को चंगा करता है और ईर्ष्यालु और अभिमानी लोगों को रोकता है।
7 हे मेरे लड़के! तू मेरे लिए बिच्छू के समान है जो पीतल पर लगकर उसे छेद देता है।
8 हे मेरे लड़के! तू उस हिरन के समान है जो मजीठ की जड़ें खा रहा था, और आज यह मुझे जोड़ता है और कल वे मेरी
जड़ों में छिप जाएंगे।" 9 हे मेरे लड़के! तूने अपने साथी को
सर्दी के ठंडे मौसम में नंगा देखा और उसने ठंडा पानी लिया
और उस पर डाला। 10 हे मेरे लड़के! तूने मेरे लिए उस

आदमी की तरह काम किया जिसने एक पत्थर लिया और अपने भगवान को पत्थर मारने के लिए इसे आकाश में फेंक दिया। और पत्थर नहीं लगा, और बहुत ऊपर तक नहीं पहुंचा, लेकिन यह अपराध और पाप का कारण बन गया। 11 हे मेरे लड़के! यदि तूने मेरा सम्मान किया होता और मेरा आदर किया होता और मेरी बातों को सुना होता तो तू मेरा उत्तराधिकारी होता और मेरे राज्य पर शासन करता। 12 हे मेरे बेटे! जान ले कि यदि कुत्ते या सुअर की दुम दस हाथ लंबी होती तो भी वह घोड़े की दुम के बराबर नहीं होती, भले ही वह रेशम की तरह क्यों न हो। 13 हे मेरे लड़के! मैंने सोचा था कि तू तो मेरी मृत्यु के समय मेरा उत्तराधिकारी होता; परन्तु तूने अपनी ईर्ष्या और अहंकार के कारण मुझे मार डालना चाहा। परन्तु यहोवा ने मुझे तेरी धूर्तता से बचाया।
14 हे मेरे बेटे! तू मेरे लिए उस जाल के समान है जो कूड़े के ढेर पर लगाया गया था, और एक गौरैया आई और जाल को लगा हुआ पाया। और गौरैया ने जाल से पूछा, "तू यहाँ क्या कर रहा है?" जाल ने कहा, "मैं यहाँ परमेश्वर से प्रार्थना कर रही हूँ।"
15 और लार्क ने भी उससे पूछा, "तूने जो लकड़ी का टुकड़ा पकड़ा है वह क्या है?" जाल ने कहा, "यह एक छोटा ओक का पेड़ है जिस पर मैं प्रार्थना के समय झुकती हूँ।"
16 लार्क ने कहा: "और तेरे मुँह में वह चीज़ क्या है?" जाल ने कहा: "यह रोटी और भोजन है जिसे मैं उन सभी भूखे और गरीबों के लिए ले जाती हूँ जो मेरे पास आते हैं।"
17 लार्क ने कहा: "तो अब मैं आगे आकर खा सकती हूँ, क्योंकि मैं भूखी हूँ?" और जाल ने उससे कहा, "आगे आओ।" और लार्क उसके पास गया, ताकि वह खा सके।
18 लेकिन जाल उछला और लार्क की गर्दन पकड़ ली।
19 और लार्क ने जाल को उत्तर दिया और कहा, "यदि यह भूखे के लिए तुम्हारी रोटी है, तो परमेश्वर तुम्हारे दान और तुम्हारे अच्छे कामों को स्वीकार नहीं करता।
20 और यदि यह तुम्हारा उपवास और तुम्हारी प्रार्थना है, तो परमेश्वर न तो तुम्हारा उपवास स्वीकार करता है और न ही तुम्हारी प्रार्थना, और परमेश्वर तुम्हारे लिए जो अच्छा है उसे पूरा नहीं करेगा।"
21 हे मेरे लड़के! तुम मेरे लिए एक शेर की तरह हो जिसने गधे से दोस्ती की, और गधा कुछ समय के लिए शेर के सामने चलता रहा; और एक दिन शेर गधे पर उछला और उसे खा गया।
22 हे मेरे लड़के! तुम मेरे लिए गेहूं में एक घुन की तरह हो, क्योंकि यह किसी भी चीज का भला नहीं करता, बल्कि गेहूं को खराब करता है और उसे कुतरता है।
23 हे मेरे लड़के! तू उस मनुष्य के समान है, जिसने दस सेर गेहूँ बोया, और जब कटनी का समय आया, तो उठकर उसे काटा, और बटोरा, और दावनी की, और उस पर जी-जान से मेहनत की, और वह दस सेर निकला, और उसके स्वामी ने उससे कहा: “हे आलसी! तू न तो बढ़ा, और न छोटा हुआ।”
24 हे मेरे बेटे! तू मेरे लिए उस तीतर के समान है, जो जाल में फेंका गया था, और वह अपने आप को बचा नहीं सका, परन्तु उसने तीतरों को पुकारा, कि वह उन्हें अपने साथ जाल में डाल दे।
25 हे मेरे बेटे! तू मेरे लिए उस कुत्ते के समान है, जो ठण्डा होने पर कुम्हार के घर में गर्म होने के लिए गया।
26 और जब वह गर्म हुआ, तो उन पर भौंकने लगा, और उन्होंने उसे भगाया और उसे मारा, कि वह उन्हें न काटे।
27 हे मेरे बेटे! तुम मेरे लिए उस सूअर के समान हो जो अच्छे लोगों के साथ गर्म पानी से नहाने गया था, और जब वह गर्म पानी से नहाने से बाहर आया तो उसने एक गंदा गड्ढा देखा और वह उसमें घुस गया और लोटने लगा।
28 हे मेरे बेटे! तू मेरे लिए उस बकरे के समान है जो बलि के लिए अपने साथियों के साथ जा रहा था, और वह खुद को बचा नहीं सका।
29 हे मेरे बेटे! जिस कुत्ते को शिकार से कुछ नहीं मिलता, वह मक्खियों का भोजन बन जाता है।
30 हे मेरे बेटे! जो हाथ मेहनत नहीं करता और हल नहीं चलाता, और जो लालची और चालाक है, वह उसके कंधे से काट दिया जाएगा।
31 हे मेरे बेटे! जिस आँख से रोशनी नहीं दिखती, कौवे उसे नोचकर निकाल लेंगे।
32 हे मेरे बेटे! तू मेरे लिए उस पेड़ के समान है जिसकी शाखाएँ वे काट रहे थे, और उसने उनसे कहा, "यदि मेरा कुछ तुम्हारे हाथ में न होता, तो तुम मुझे काट नहीं पाते।"
33 हे मेरे बेटे! तू उस बिल्ली के समान है जिससे उन्होंने कहा: "जब तक हम तुम्हारे लिए सोने की एक जंजीर नहीं बना लेते और तुम्हें चीनी और बादाम नहीं खिलाते, तब तक चोरी करना छोड़ दो।" 34 और उसने कहा, "मैं अपने पिता और अपनी माँ के छल को नहीं भूली हूँ।"
35 हे मेरे बेटे! तू उस साँप के समान है जो नदी के बीच में एक कंटीली झाड़ी पर सवार था, और एक भेड़िये ने उन्हें देखकर कहा, "दुष्टता पर उपद्रव, और जो उनसे अधिक दुष्ट है, वह उन दोनों को निर्देश दे।"
36 और साँप ने भेड़िये से कहा, "मेमने और बकरियाँ और भेड़ें जिन्हें तूने जीवन भर खाया है, क्या तू उन्हें उनके पिता और माता-पिता को लौटा देगा या नहीं?"
37 भेड़िये ने कहा, "नहीं।" और साँप ने उससे कहा, "मुझे लगता है कि मेरे बाद तू हम में से सबसे बुरा है।"
38 हे मेरे लड़के! मैंने तुझे अच्छा खाना खिलाया और तूने मुझे सूखी रोटी नहीं खिलाई।
39 हे मेरे लड़के! मैंने तुझे चीनी मिला पानी दिया। 40 हे मेरे लड़के! मैंने तुझे पढ़ाया, बड़ा किया, और तूने मेरे लिए छिपने की जगह खोदी और मुझे छिपाया। 41 हे मेरे लड़के! मैंने तुझे सबसे अच्छी परवरिश दी और तुझे एक ऊँचे देवदार की तरह प्रशिक्षित किया; और तूने मुझे मरोड़ दिया और झुका दिया। 42 हे मेरे लड़के! मुझे तुझसे उम्मीद थी कि तू मेरे लिए एक मज़बूत किला बनाएगा, ताकि मैं अपने दुश्मनों से उसमें छिप सकूँ, और तू मेरे लिए धरती की गहराई में दफनाए गए व्यक्ति की तरह बन गया; लेकिन भगवान ने मुझ पर दया की और मुझे तेरी चालाकी से बचाया। 43 हे मेरे लड़के! मैंने तेरा भला चाहा, और तूने मुझे बुराई और घृणा से पुरस्कृत किया, और अब मैं तेरी आंखें फोड़ देना चाहता हूं, और तुझे कुत्तों का भोजन बना देना चाहता हूं, और तेरी जीभ काट लेना चाहता हूं, और तलवार की धार से तेरा सिर काट लेना चाहता हूं, और तेरे घिनौने कामों का बदला तुझे देना चाहता हूं।' 44 और जब

नादान ने अपने चाचा हैकार से यह बात सुनी, तो उसने कहा: 'हे मेरे चाचा! अपने ज्ञान के अनुसार मेरे साथ व्यवहार कर, और मेरे पापों को क्षमा कर, क्योंकि ऐसा कौन है जिसने मेरे समान पाप किया हो, या ऐसा कौन है जो तेरे समान क्षमा कर सके? 45 हे मेरे चाचा, मुझे स्वीकार कर! अब मैं तेरे घर में सेवा करूंगा, और तेरे घोड़ों की सफाई करूंगा, और तेरे मवेशियों का गोबर साफ करूंगा, और तेरी भेड़ों को चराऊंगा, क्योंकि मैं दुष्ट हूं और तू धर्मी है: मैं अपराधी हूं और तू क्षमा करनेवाला है।' 46 और हैकार ने उससे कहा, 'हे मेरे लड़के! तू उस पेड़ के समान है जो पानी के किनारे फलहीन था, और उसका स्वामी उसे काटना चाहता था, और उसने उससे कहा, "मुझे दूसरी जगह ले जा, और यदि मैं फल न दूँ, तो मुझे काट डाल।" 47 और उसके स्वामी ने उससे कहा, "तू पानी के किनारे रहकर भी फल नहीं दे पाया, तो तू दूसरी जगह जाकर कैसे फल देगा?" 48 हे मेरे लड़के! चील की बुढ़ापा कौवे की जवानी से बेहतर है। 49 हे मेरे लड़के! उन्होंने भेड़िये से कहा, "भेड़ों से दूर रहो, कहीं उनकी धूल तुम्हें नुकसान न पहुँचा दे।" और भेड़िये ने कहा, "भेड़ों के दूध का मल मेरी आँखों के लिए अच्छा है।" 50 हे मेरे लड़के! उन्होंने भेड़िये को स्कूल भेजा ताकि वह पढ़ना सीख सके और उन्होंने उससे कहा, "ए, बी बोलो।" उसने कहा, "मेरी घंटी में मेमना और बकरी" 51 हे मेरे लड़के! उन्होंने गधे को मेज पर रख दिया और वह गिर पड़ा, और धूल में लोटने लगा और एक ने कहा, "उसे लोटने दो, क्योंकि यह उसका स्वभाव है, वह नहीं बदलेगा।
52 हे मेरे लड़के! कहावत की पुष्टि हो गई है जो कहती है: "यदि तू लड़का पैदा करता है, तो उसे अपना बेटा कह और यदि तू लड़का पालता है, तो उसे अपना दास कह।"
53 हे मेरे लड़के! जो अच्छा करता है, उसे अच्छाई मिलेगी और जो बुरा करता है, उसे बुराई मिलेगी, क्योंकि प्रभु मनुष्य को उसके काम के अनुसार बदला देता है।
54 हे मेरे लड़के! मैं इन बातों से बढ़कर तुझसे और क्या कहूँ? क्योंकि प्रभु गुप्त बातों को जानता है, और भेदों और रहस्यों से परिचित है।
55 और वह तुझे बदला देगा और मेरे और तेरे बीच न्याय करेगा, और तेरे योग्य काम के अनुसार तुझे बदला देगा।',
56 और जब नादान ने अपने चाचा हैकार से यह बात सुनी, तो वह फूल गया तुरन्त ही वह एक फटे हुए मूत्राशय के समान हो गया।
57 और उसके अंग सूज गए और उसके पैर और पांव और उसकी बगल सूज गई और वह फट गया और उसका पेट फट गया और उसकी अंतड़ियाँ बिखर गईं और वह मर गया और मर गया।
58 और उसका अन्त विनाश हुआ और वह नरक में गया। क्योंकि जो अपने भाई के लिए गड्ढा खोदता है वह उसमें गिर जाएगा; और जो जाल बिछाता है वह उनमें फँस जाएगा।
59 यही हुआ और (जो) हमने हैकार की कहानी के बारे में पाया, और सदा के लिए परमेश्वर की स्तुति हो। आमीन, और शांति।
60 यह इतिहास परमेश्वर की सहायता से समाप्त हुआ है, उसकी महिमा हो! आमीन, आमीन, आमीन।